Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> तिम कुगुर छें कूवा सारिषा,
> जाजम सम रे कनें साध रो भेष।
> त्यानें गुर लेखव बंदणा करें,
> ते डूबें रे मूरख अंध अदेख।।
>
> कुगुरु कुए के समान हैं, साधु का वेश जाजम के समान। कुगुरु को जो गुरु मान वंदना करता है वह मूर्ख अज्ञानी डूब जाता है।
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 32 • 11 मई - 17 मई 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 09-05-2026 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

विषय ज्ञान और आत्म-कल्याण का माध्यम बने भाषा : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 03

नामधारी असंयमी साधु से बेहतर है व्रतधारी गृहस्थ : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

Address Here

अभातेयुप की युवा दिवस अवसर पर रही विशेष प्रस्तुति

साधुता ही सबसे बड़ी संपदा, मन को जीतना ही असली साम्राज्य : आचार्यश्री महाश्रमण

दोहरा उत्सव : लाडनूं में मना आचार्यश्री का 53वां दीक्षा दिवस और साध्वी प्रमुखा का 5वां चयन दिवस

लाडनूं।
30 अप्रैल, 2026

जैन विश्व भारती का परिसर आज उस समय विशेष आध्यात्मिक उल्लास से भर उठा जब तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का 53वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस) और नवम् साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी का 5वां चयन दिवस एक साथ मनाया गया। इस दोहरे मांगलिक प्रसंग पर सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ की विशाल उपस्थिति रही।

साधुत्व : करोड़ों में मिलने वाला दुर्लभ अवसर : मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'युवा दिवस' पर विशेष संबोधन देते हुए आचार्यश्री ने अपने दीक्षा प्रसंग को याद किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया, 'आज से 52 वर्ष पूर्व बैसाख शुक्ला चतुर्दशी को सरदारशहर की धरा पर मुझे मुनि सुमेरमल जी स्वामी 'लाडनूं' के हाथों साधु दीक्षा प्राप्त हुई थी। करोड़ों गृहस्थों में से किसी विरले को ही साधुत्व का यह दुर्लभ अवसर मिलता है। भौतिक संपदा वाले सम्राट हो सकते हैं, लेकिन सच्चा सम्राट वही है जिसने मन को वश में कर लिया और धर्म को जीवन में उतार लिया।'

> सफलता का मंत्र - अनुशासन
> -आचार्यश्री महाश्रमण

अनुशासन पर्वः सजगता ही साधुता है : 'कैसे करें यौवन का उपयोग' विषय पर प्रेरणा देते हुए आचार्य प्रवर ने साधु चर्या के प्रति पूर्ण जागरूकता का आह्वान किया। पूज्य प्रवर ने पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्तियों की सम्यक आराधना को ही वास्तविक साधुपन बताया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि चलते, उठते-बैठते और गोचरी करते समय साधु को पूर्ण सावधान रहना चाहिए ताकि महाव्रतों में कोई दोष न लगे।

साध्वी प्रमुखा की सेवाओं की सराहना : साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी के चयन दिवस पर आचार्यश्री ने उनके समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि पूर्व में नियोजिका और मुख्य नियोजिका के रूप में उनकी लंबी सेवाएं उन्हें परिपक्व बनाती हैं। महाप्रज्ञ वाङ्मय के संपादन और आगम कार्यों में उनके योगदान को अनुकरणीय बताते हुए आचार्यश्री ने उनके उत्तम स्वास्थ्य और उत्कृष्ट साधना का आशीर्वाद प्रदान किया।

(शेष पेज 13 पर)

"इंद्रिय बलहीनता पर दें ध्यान" विषय पर पावन बोध; रात्रि में स्वाध्याय व प्रकाश के चयन हेतु चारित्रात्माओं को विशेष निर्देश

इंद्रियाँ हैं साधना का माध्यम, इनकी सक्षमता पर ध्यान देना हर साधक का दायित्व : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
05 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज 'इंद्रिय बलहीनता' के महत्वपूर्ण विषय पर पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने जीवन के उत्तरार्ध में होने वाली शारीरिक और इंद्रिय शिथिलता के प्रति सचेत करते हुए उनके संयमित उपयोग का मार्ग दिखाया।

इंद्रियाँ: विकास और शक्ति का पैमाना: आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मानव शरीर में पाँच इंद्रियाँ होती हैं, जो चेतना के विकास की द्योतक हैं। इंद्रियों के विभिन्न क्रमों का विश्लेषण करते हुए पूज्य प्रवर ने बताया कि चक्षु (आंख) को प्रधानता देने का एक कारण यह भी है कि इंद्रिय शक्ति की हीनता बहुलांशतया सबसे पहले आंखों पर ही आती है। भगवान ने गौतम के माध्यम से संदेश दिया है कि अवस्था बढ़ने पर शरीर के साथ-साथ इंद्रिय बल, मनोबल और प्राणशक्ति में दुर्बलता आना स्वाभाविक है।

साधना के लिए इंद्रिय सुरक्षा आवश्यक: चारित्रात्माओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने इंद्रियों की सुरक्षा और सदुपयोग पर विशेष बल दिया।

(शेष पेज 13 पर)

धर्म रूपी जलाशय और ब्रह्मचर्य तीर्थ ही ऋषियों का वास्तविक महास्नान : आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा की शुद्धि के लिए संयम के जल में स्नान अनिवार्य; प्रेक्षाध्यान शिविरार्थियों को प्राप्त हुई उपसंपदा

लाडनूं।
03 मई, 2026

> बाहरी जल से तन की शुद्धि, धर्म-जलाशय से मन की शुद्धि
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज 'महास्नान ऋषियों का' विषय पर मार्मिक तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया। आचार्यश्री ने एक संवाद के माध्यम से स्पष्ट किया कि शरीर की बाहरी स्वच्छता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण आत्मा की आंतरिक शुद्धि है।

धर्म का जलाशय और प्रसन्न लेश्या: एक मुनि और जिज्ञासु के संवाद का उदाहरण देते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि ऋषियों का जलाशय 'धर्म' है, जहाँ प्रसन्न (निर्मल) लेश्या का वास होता है। जैसे स्वच्छ आकाश को प्रसन्न कहा जाता है, वैसे ही धर्म रूपी निर्मल जल में स्नान कर ऋषि अपने कर्म-रजों को धोते हैं। ब्रह्मचर्य को 'शांति तीर्थ' बताते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि इस आध्यात्मिक स्नान से ही आत्मा विमल और विशुद्ध बनती है।

आत्मा की नदी और संयम का जल : शास्त्रों के श्लोक का उद्धरण देते हुए आचार्यश्री ने समझाया कि हमारी आत्मा एक नदी के समान है। यदि इसमें संयम रूपी पुण्य जल हो, सत्य का प्रवाह हो, दया की लहरें हों और शील का सुदृढ़ तट हो, तो ऐसी नदी में स्नान करने से आत्मा का कल्याण सुनिश्चित है। बाहरी पानी से होने वाला स्नान केवल शरीर को स्वच्छ कर सकता है, किन्तु भीतर के पाप केवल संयम रूपी जल से ही धुल सकते हैं।

प्रतिक्रमण : आत्म-शुद्धि का दैनिक स्नान : साधु जीवन में प्रतिक्रमण की महत्ता बताते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि प्रतिक्रमण भी एक प्रकार का स्नान ही है। यद्यपि लक्ष्य यह होना चाहिए कि दोष लगे ही नहीं, फिर भी यदि प्रमादवश कोई अतिचार लग जाए, तो सुबह-शाम प्रतिक्रमण के माध्यम से आत्म-सफाई कर लेनी चाहिए। उन्होंने गृहस्थों को भी पर्युषण आदि अवसरों पर प्रतिक्रमण के जरिए इस धर्म-जलाशय में स्नान करने की प्रेरणा दी।

शिविरार्थियों को उपसंपदा एवं अभिवंदना : आचार्य प्रवर ने प्रेक्षाध्यान शिविर के प्रतिभागियों को विधिवत 'उपसंपदा' प्रदान कराई। कार्यक्रम में मुनि मर्यादा कुमार जी एवं मुनि मेघ कुमार जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी चेतनयशा जी, साध्वी मेरुप्रभा जी सहित अनेक साध्वी व समणी वृन्द ने प्रस्तुतियाँ दीं।

इस अवसर पर भीलवाड़ा के सांसद दामोदर अग्रवाल ने भी पूज्यवर के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव पर अपनी विनयांजलि अर्पित की और आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

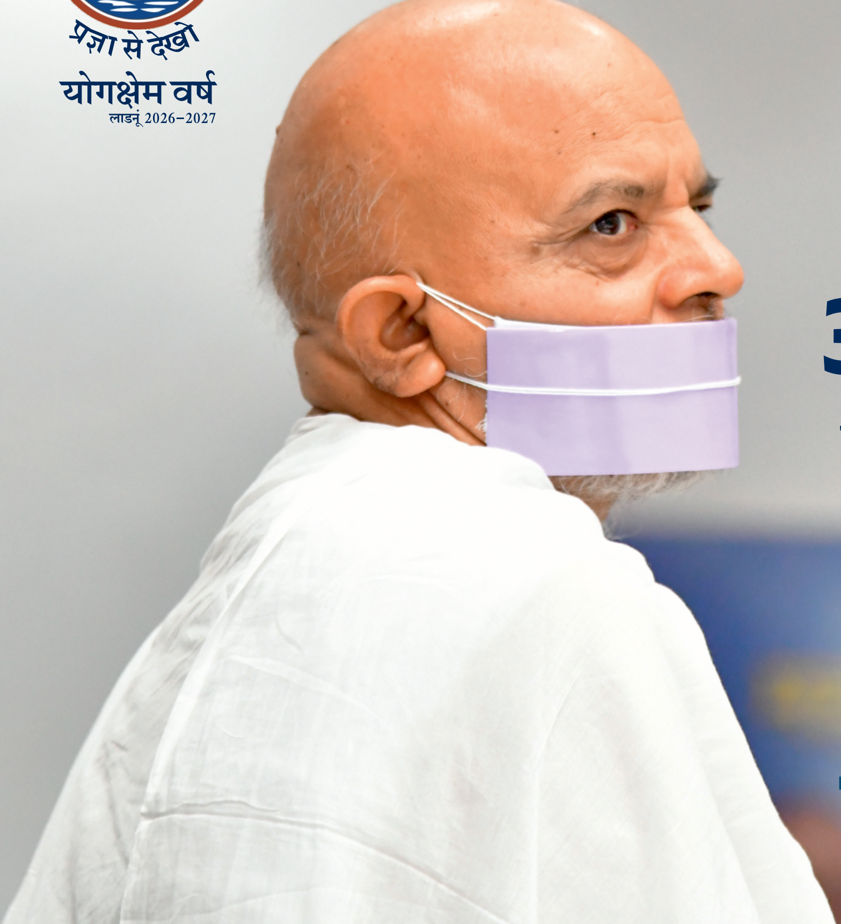

जब तक अज्ञानता की अनुभूति नहीं होती,
तब तक व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता।

परम पूज्य युगप्रधान
आचार्यश्री महाश्रमणजी
के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धासुमन

:: अभिवंदना ::

सेवा संस्कार संगठन
तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद

विषय ज्ञान और आत्म-कल्याण का माध्यम बने भाषा : आचार्यश्री महाश्रमण

भाषाओं का ज्ञान किसलिए? विषय पर शांतिदूत का पावन प्रतिबोध | योगक्षेम वर्ष की परीक्षाओं हेतु परीक्षकों की घोषणा

लाडनूं।
02 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने 'भाषाओं का ज्ञान किसलिए?' विषय पर चतुर्विध धर्म संघ को पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने अध्ययन-अध्यापन में भाषा की उपयोगिता और उसके आध्यात्मिक पक्ष पर गंभीर प्रकाश डाला।

भाषा केवल माध्यम, मूल है 'विषयः'
आचार्य प्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में भाषा एक बड़ा माध्यम है। अध्ययन और अध्यापन की प्रक्रिया में दो प्रमुख तत्व होते हैं—विषय और भाषा। अध्यात्म विद्या, भूगोल, खगोल, गणित, विज्ञान और चिकित्सा जैसे गहन विषयों को जानने के लिए भाषा केवल एक मार्ग बनती है। अपनी बात अभिव्यक्त करने और दूसरों के विचारों को समझने के लिए भाषाओं का ज्ञान अपेक्षित है।

मौलिकता के लिए भाषा का ज्ञान अनिवार्य : आचार्यश्री ने संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं के महत्व को रेखांकित करते हुए फरमाया कि जिस भाषा के ग्रंथ हों, यदि उसी भाषा में उनका अध्ययन किया जाए तो ज्ञान में मौलिकता बनी रहती है। उन्होंने अभ्यास की महत्ता पर बल देते हुए फरमाया कि सीखी हुई भाषा निरंतर संपर्क और अभ्यास के बिना मंद पड़

> भाषाओं की विचित्रता में न उलझें, इसे बनाएं कर्म निर्जरा का माध्यम
> -आचार्यश्री महाश्रमण

सकती है। अपनी मातृभाषा में बोलना और समझना सहज होता है, किंतु अन्य भाषाओं के लिए पुरुषार्थ आवश्यक है। भाषा के उपयोग से हो कर्म निर्जरा शास्त्रों का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि संसार की ये विचित्र भाषाएं, व्याकरण और विभक्तियां स्वयं में 'त्राण' (शरण) देने वाली नहीं होतीं। त्राण की प्राप्ति तो केवल सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना से ही संभव है।

भाषा का उपयोग यदि स्वयं और दूसरों के उपकार के लिए हो, तो वह कर्म निर्जरा का माध्यम बन सकती है। साधकों को प्रयास करना चाहिए कि भाषा ज्ञान साधना में सहयोगी बने।

परीक्षा एवं परीक्षकों की घोषणाः योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत चल रहे शिक्षण-प्रशिक्षण के क्रम में आचार्य प्रवर ने आगामी परीक्षाओं के संदर्भ में परीक्षकों के नामों की घोषणा की। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

अभिवंदना का क्रम जारी : पूज्य गुरुदेव के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के उपलक्ष्य में चारित्रात्माओं और समणी वृंद की भावपूर्ण प्रस्तुतियों का क्रम आज भी जारी रहा।

अभातेयुप द्वारा युवा दिवस का भव्य आयोजन

लाडनूं।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के 53वें दीक्षा दिवस पर परम पावन आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में जैन विश्व भारती, लाडनूं में 30 अप्रैल 2026 को अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा 'युवा दिवस' का आयोजन किया गया। परम पूज्य गुरुदेव ने युवाओं को नशा मुक्ति की प्रेरणा देते हुए अभातेयुप एवं युवाओं को आध्यात्मिक सामाजिक क्षेत्र में खूब विकास करने का आशीर्वाद दिया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने तेरापंथ समाज की संपूर्ण युवा शक्ति की ओर से परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में भावांजलि अर्पित की। तेरापंथ युवक परिषद, अहमदाबाद के युवा साथियों द्वारा पूज्य गुरुदेव के जीवनवृत्तांत को अलग-अलग खंड में चित्र के माध्यम से मधुर गीत के साथ प्रस्तुत किया गया। संयोजन अभातेयुप महामंत्री सौरभ पटावरी ने किया।

इस अवसर पर अभातेयुप द्वारा परम पूज्य आचार्य प्रवर को श्रद्धाप्रणति स्वरूप 'तपोयज्ञ' के अंतर्गत 'संयम सुपर स्प्रिंट', 'सरगम' के अंतर्गत 'महाश्रमणोत्सव मंगलम 3.0' एवं 'संयम यूनिवर्स' का आयोजन किया गया। जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में संयम यूनिवर्स का सांकेतिक निर्माण किया गया, जहां स्वयं गुरुदेव ने पधार कर अवलोकन करवाते हुए आशीर्वाद की वर्षा से युवा शक्ति को कृतार्थ किया। इसमें कल्पवृक्ष, संयम व्हील, अमृत कलश एवं संयम सेल्फी बूथ जैसे प्रेरणादायक प्रतीक बनाए गए। देशभर से लाडनूं पधारे श्रद्धालुओं एवं युवाओं ने पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में संयम यूनिवर्स में संकल्प ग्रहण किए। संयम यूनिवर्स आगंतुक युवाओं और श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक अनुभव, प्रेरणा एवं आत्म-संकल्प का केंद्र बिंदु बना। संयम सुपर स्प्रिंट के अंतर्गत देशभर की लगभग 201 परिषदों की सक्रिय सहभागिता रही एवं अभियान के अंतर्गत 27,000 से अधिक संकल्प पूर्ण किए गए। 'तेरापंथ टास्क फोर्स' के अंतर्गत 'टीटीएफ शौर्यः लाइफ सेविंग अभियान' का शुभारंभ परम पूज्य गुरुदेव के पावन

सान्निध्य में किया गया, जिसके अंतर्गत देशभर में 53 कार्यशालाओं के आयोजन का लक्ष्य रखा गया है।

युवा दिवस की पूर्व संध्या पर 29 अप्रैल 2026 को जैन विश्व भारती स्थित महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल के महाश्रमण ऑडिटोरियम में भव्य भक्ति संध्या 'महाश्रमणोस्तु मंगलम 3.0' का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया ने भक्तिमय प्रस्तुतियां देकर उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। केन्द्र के अतिरिक्त 'महाश्रमणोत्सव मंगलम 3.0' के अंतर्गत देशभर में 75 से अधिक परिषदों द्वारा भक्ति संध्या का आयोजन कर सहभागिता दर्ज करवाई जाएगी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय पवन मांडोत के नेतृत्व में युवा साथियों ने युवा दिवस की प्रातः कालीन मंगल बेला में शुभकामना एवं गीत से आचार्य प्रवर की अभ्यर्थना की। इसी के साथ साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चयन दिवस पर उनके समक्ष भी अभिवंदना के स्वर प्रस्तुत किए गए।

युवा दिवस 2026 के अंतर्गत आयोजित संयम सुपर स्प्रिंट, महाश्रमणोत्सव मंगलम 3.0 एवं संयम यूनिवर्स को देशभर में अत्यंत सकारात्मक प्रतिसाद प्राप्त हुआ। आयोजन को सफल बनाने में अभातेयुप प्रबंध मंडल के साथ युवा दिवस संयोजक सिद्धार्थ चोरड़िया, सहसंयोजक कैलाश तातेड़ एवं नीरज आच्छा का निष्ठापूर्ण श्रम व सहयोग रहा। शाखा परिषदों एवं कार्यकर्ताओं के सामूहिक प्रयासों से यह आयोजन भव्य एवं प्रेरणादायक रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
11 मई - 17 मई 2026

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में

दक्षिणांचल स्तरीय युवा सम्मेलन का आयोजन

लाडनूं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में 29-30 अप्रैल-01 मई 2026 को जैन विश्व भारती, लाडनूं में त्रिदिवसीय 'दक्षिणांचल स्तरीय युवा सम्मेलन' परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन में दक्षिण भारत की 15 शाखा परिषदों के लगभग 100 युवाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और 'नये भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर उपस्थित युवकों को उद्बोधन प्रदान किया।

सम्मेलन का शुभारंभ मुनि सुमतिकुमारजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ प्रारंभ हुआ, जिसके बाद उद्घाटन सत्र में विजय गीत और श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। मुनि सुमतिकुमारजी ने सम्यक्त्व को जीवन का अनमोल हीरा बताते हुए कहा कि यह हर जीव को प्राप्त नहीं होता। उन्होंने सम्यक्त्व के पांच लक्षणों शम-समता, संवेग-वैराग्य, निर्वेद-मोक्ष की अभिलाषा, अनुकंपा-दया और आस्तिक्य-आस्था का विस्तृत विवेचन किया। मुनि अर्हतकुमारजी ने कहा कि संघ बलिदान मांगता है, इसलिए उन्होंने युवाओं को 24 घंटे में से कम से कम 1 घंटा संघ प्रभावना के कार्यों के लिए निकालने का संकल्प दिलाया। मुनि नयकुमारजी ने योगक्षेम की महत्ता बताते हुए युवा शक्ति को धर्मसंघ की रीढ़ कहा और युवकों को आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूने का आह्वान किया।

मुनि देवार्यकुमारजी ने तेरापंथ के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को ऊर्जा के सही दिशा में उपयोग की प्रेरणा दी। उन्होंने स्पष्ट किया कि विचारों से शब्द, शब्दों से वाणी और वाणी से क्रिया व भाग्य का निर्माण होता है। मुनि भरतकुमारजी ने अंक विज्ञान के माध्यम से मानवीय जीवन और ग्रहों पर प्रभाव को रोचक ढंग से समझाया। मुनि सत्य कुमार जी ने 'भिक्षु दर्शन : जीवन दर्पण' विषय पर अपने विचार रखते हुए युवा शक्ति को भिक्षु दर्शन को सरल शब्दों में समझाया तथा युवकों को मार्ग से भटकने से सावधान किया।

मुनि जयदीपकुमारजी ने युवाओं को Realise, Compromise & Sacrifice के साथ I can, I want, I will का सूत्र दिया। मुनि नम्रकुमारजी ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से संघ की महिमा का गुणगान किया।

अभातेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने संबोधन में संगठन की मजबूती और संस्कारों के प्रति युवाओं की जिम्मेदारी को रेखांकित किया। सहमंत्री प्रथम पवन नौलखा ने रोचक गतिविधि से संभागीगण को अपनी विशेषता पहचानने और उसे बढ़ाने का मार्ग बताया। अध्यक्ष महोदय के नेतृत्व और प्रबंध मंडल की गरिमामयी उपस्थिति में यह सम्मेलन आध्यात्मिक ऊर्जा, सकारात्मक सोच और संघ के प्रति अटूट निष्ठा के संकल्प के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सम्मेलन को सफल बनाने में अभातेयुप संपूर्ण प्रबंध मंडल एवं विशेष रूप से सहमंत्री द्वितीय अंकुर लूनिया, संगठन मंत्री रोहित कोठारी, दक्षिणांचल स्तरीय युवा सम्मेलन के संयोजक आशीष दक, सहसंयोजक सोनू डागा, मनीष पटावरी, अमित दक आदि का निष्ठापूर्ण श्रम एवं सहयोग रहा।

कौटिल्य 3.0– "ह्यूमन इंटेलिजेंस इन द एरा ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" का सफल आयोजन

बैंगलोर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, बेंगलुरु सेंट्रल द्वारा "कौटिल्य 3.0 – ह्यूमन इंटेलिजेंस इन द एरा ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" विषय पर एक विशेष एआई कॉन्क्लेव का सफल आयोजन किया गया। यह एक पूर्ण-दिवसीय एआई समिट था, जिसमें 250 से अधिक प्रोफेशनल्स, स्टूडेंट्स और एंटरप्रेन्योर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत अशोक सुराणा एवं टीम द्वारा मंगलाचरण से हुई, स्वागत भाषण वर्षा जैन, मंत्री टीपीएफ बेंगलुरु सेंट्रल द्वारा दिया गया, इसके पश्चात अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा ने सभी उपस्थितजनों का स्वागत किया, माननीय वक्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया तथा इस सत्र की महत्ता पर प्रकाश डाला कि यह कार्यक्रम किस प्रकार "ह्यूमन इंटेलिजेंस इन द एरा ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" को समझने में सहायक होगा। इसके बाद टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने संगठन की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी, जिसके पश्चात राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी एवं साउथ जोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरुआत नेटवर्किंग सेशन से हुई, जिसके बाद प्रथम सत्र आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य साध्वी पवनप्रभा जी (ठाना-4) की पावन उपस्थिति में आयोजित हुआ, जिसमें उन्होंने 'अध्यात्मिक इंटेलिजेंस वर्सेस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' के संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के महत्व पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में मुख्य वक्ता राहुल बोथरा, सीएफओ – स्विगी ने 'व्हाट यू नो दैट एआई डज़ नॉट' विषय पर अपने विचार साझा किए, जिसमें उन्होंने आत्मविश्वास और मानव बुद्धिमत्ता की प्रासंगिकता पर जोर दिया। तीसरे सत्र में सौरभ बोथरा, को-फाउंडर – हाबिल्ड ने "हैबिट बिल्डिंग" के महत्व पर प्रकाश डाला। यह सत्र अत्यंत रोचक और इंटरैक्टिव रहा, जिसमें प्रतिभागियों ने योगाभ्यास भी किया और अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए। चौथा सत्र चेतन बरलोटा द्वारा एक प्रैक्टिकल वर्कशॉप के रूप में आयोजित किया गया, जिसमें उन्होंने विभिन्न उपयोगों के लिए अपना एआई असिस्टेंट बनाने का लाइव डेमो प्रस्तुत किया। पांचवां सत्र आनंद लुनिया, फाउंडर पार्टनर – इंडिया कोटिएंट द्वारा "एआई – डिनायल मोड" विषय पर आधारित था, जिसमें उन्होंने नई तकनीकों के प्रति मानव की प्रारंभिक अस्वीकृति और भविष्य में एआई की भूमिका पर चर्चा की। अंतिम सत्र एक पैनल डिस्कशन के रूप में आयोजित किया गया, जिसमें पैनलिस्ट के रूप में निलेश डुंगरवाल (को-फाउंडर – वर्कइंडिया अजय अग्रवाल (को-फाउंडर – राम्प.एआई) एवं विकास जैन (को-फाउंडर – मल्टिप्ल) उपस्थित थे। इस सत्र का संचालन राहुल डागा, वीपी टीपीएफ बेंगलुरु सेंट्रल द्वारा किया गया। "ह्यूमन इंटेलिजेंस इन द एरा ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" की प्रासंगिकता पर विचार-विमर्श हुआ और श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। कार्यक्रम का समापन एक हल्के-फुल्के अंदाज़ में कॉमेडियन दीपक शर्मा के स्टैंडअप कॉमेडी सेशन के साथ हुआ, जिसके पश्चात लकी ड्रॉ आयोजित किया गया। नए टीपीएफ फेलो सदस्य राहुल डागा, स्वर्णमाला पोखरणा का सम्मान किया गया।

नगर प्रवेश स्वागत समारोह व तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

कवाडीगुड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणणी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी ठाणा-२ हैदराबाद नगर प्रवेश के उपलक्ष्य में स्वागत समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा-सिकंदराबाद द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के रूप में हुआ । तत्पश्चात सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राहुल गोलछा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष वीरेंद्र घोसल, महिला मंडल की उपाध्यक्ष संगीता गोलछा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र बोथरा ने मुनिश्री के स्वागत में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कवाडीगुड़ा की बहनों द्वारा स्वागत गीतिका व ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। मुनिश्री दीप कुमारजी ने कहा-संत आते हैं तब अपने साथ संयम, साधना और संस्कारों की गंगा लेकर आते है। हम हैदराबाद में गुरु आज्ञा से आए हैं।

हैदराबाद की श्रद्धा, भक्ति और प्रेम देखकर मेरा मन आल्हादित है। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा - आज देव गुरु धर्म के पुण्य प्रताप से गुरु महाश्रमण के आशीर्वाद से मुनि दीप कुमार जी के श्रम से और हैदराबाद श्रावक समाज की जागरूक सेवा से मुनिश्री का हैदराबाद में निर्विघ्न रूप से पधारणा हुआ है। संचालन श्री लक्ष्मीपत बैद ने किया।

एटीडीसी : नई एक्सरे मशीन और डेंटल चेयर का हुआ लोकार्पण

गांधीनगर, बेंगलुरु।

दक्षिण भारत का प्रथम युवालोक का हुआ शुभारंभ एवं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पी.जी. हल्ली के स्थानांतरण के साथ नई एक्सरे मशीन और डेंटल चेयर का लोकार्पण हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ परिषद के निर्देशन में एवं तेरापंथ युवक परिषद गांधीनगर, बेंगलुरु द्वारा आयोजित कार्यक्रम मैं राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में,दक्षिण भारत का प्रथम युवालोक का शुभारंभ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन जैन संस्कार विधि के साथ हुआ, अमित भंडारी जिससे पूरे आयोजन में आध्यात्मिक एवं संस्कारपूर्ण वातावरण का संचार हुआ। इस अवसर पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पी.जी.हल्ली के स्थानांतरण के साथ नई एक्स-रे मशीन एवं डेंटल चेयर का विधिवत लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ परिषद के राष्ट्रिय अध्यक्ष पवन मंडोत, महासभा के उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा, मुख्य अतिथि युवा गौरव विमल कटारिया, अभातेयुप संगठन मंत्री रोहित कोठारी, शाखा प्रभारी अमित दक, परामर्शक दिनेश पोकरना,परिषद अध्यक्ष प्रसन्न धोका सहित अभातेयुप परिवार, प्रदीप चोपड़ा संगठन मंत्री मोहित डूंगरवाल, विमल धारीवाल, एटीडीसी सह संयोजक प्रतीक जोगड़, पंकज भंडारी सलाहकार विनय बैद, विवेक मरोठी,रणजीत कटारिया, अमित भंडारी,महेंद्र कोचर,जितेन्द्र धोका, मुदित कोठारी,अंकित छाज्जेड,रमेश सालेचा,मनीष भंसाली,धीरज कोठारी, तरुण पटावरी,खुशहाल बैद, आदित्य सेठिया, ललित सेठिया,पियूस नाहर, सौरभ की उपस्थिति रही।

आपदा प्रबंधन एवं प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण का सफल आयोजन

हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में, गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के 53वें दीक्षा दिवस के पावन उपलक्ष्य में देशभर में प्रशिक्षण कैंपों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में हैदराबाद में प्रथम कैंप का सफल एवं प्रभावी आयोजन सम्पन्न हुआ। युवा दिवस 2026 के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा 'टीटीएफ शौर्य' के अंतर्गत अकैडेमस स्कूल, हैदराबाद में एक विशेष आपदा प्रबंधन एवं प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को आपातकालीन परिस्थितियों—जैसे जलने, रक्तस्राव, दम घुटने, फ्रैक्चर—में त्वरित एवं प्रभावी प्राथमिक उपचार प्रदान करने की तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही, स्ट्रेचर के सही उपयोग तथा सीपीआर (CPR) जैसी जीवनरक्षक प्रक्रियाओं का भी विस्तारपूर्वक अभ्यास कराया गया। इस प्रशिक्षण सत्र का संचालन EMRI Green Health Services के अनुभवी प्रशिक्षक प्रमोद कुमार द्वारा अत्यंत कुशलता के साथ किया गया, जिससे प्रतिभागियों को व्यवहारिक एवं उपयोगी ज्ञान प्राप्त हुआ। इस महत्त्वपूर्ण पहल को Young Indians तथा Hyderabad City Security Council का सशक्त सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे कार्यक्रम की गुणवत्ता और प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद की ओर से मंत्री निरज सुराणा, टीटीएफ ग्रीन ब्रिगेड के कार्यकारी सदस्य प्रांजल दुगड़ एवं सदस्य सौरभ बैद की सक्रिय सहभागिता विशेष रूप से सराहनीय रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **उदयपुर।** अक्षय जैन के नवीन प्रतिष्ठान अरिहंत हैंडलूम का हिरण मगरी सेक्टर 5 में जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज भंडारी और भूपेश खमेसरा द्वारा 5 बार नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं लोगस पाठ, पार्श्वनाथ स्तुति, मंगल भावना, संकारको द्वारा आशीर्वाद से कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

■ **गांधीनगर, दिल्ली।** श्री बाला जी जन सेवा केंद्र फिजिओथेरेपी सेंटर (चेरिटेबल इंस्टिट्यूट) का शुभारंभ सरदारशहर निवासी दिल्ली कृष्णानगर प्रवासी समाजसेवी सम्पतमल सेठिया के नूतन सेंटर (SHREE BALAJI JAN SEWA KENDRA PHYSIOTHERAPY CENTRE) का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा व श्री अशोक सिंघी ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **उदयपुर।** अनिल- संगीता जैन के सुपुत्र दीपांशु, निशांत जैन के नव प्रतिष्ठान प्रकाश फार्मा का शुभ मुहूर्त जैन संस्कार विधि से सुन्दरवास स्थित ओस्तवाल प्लाजा में करवाया गया। जैन संस्कारक पंकज भंडारी एवं भूपेश खमेसरा ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए पूर्ण विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

■ **उदयपुर।** कमलेश चौधरी एवं निधि चौधरी के नवीन कार्यालय का शुभारम्भ ओसवाल प्लाजा, उदयपुर में जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज जी भंडारी द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं लोगस पाठ, पार्श्वनाथ स्तुति, मंगल भावना, संकारको द्वारा आशीर्वाद, महावीर स्तुति के साथ सम्पूर्ण विधि विधान से कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

नूतन आवास

■ **जयपुर।** नवरत्न सिंघी के नूतन आवास अरिहंत विला, 86 कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड़, जयपुर में जैन संस्कार विधि से धी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी, तरूण बोथरा ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर आशीर्वाद के साथ सम्पूर्ण विधि विधान से कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

■ **जयपुर।** निधि - सुशील जैन के नूतन आवास प्लॉट नंबर 44 दिव्या एनक्लेव मैन लालचंदपुरा निवारू रोड ऑपोजिट जोशी पैराडाइज जयपुर पर धी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सम्पूर्ण विधि विधान से कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

■ **जयपुर।** पदमचंद बैद के नूतन आवास प्लॉट न. 3/266, चित्रकूट स्कीम, वैशाली नगर, जयपुर में जैन संस्कार विधि से संस्कारक तरूण बोथरा, सौरभ जैन ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सम्पूर्ण विधि विधान से कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** राजेश-शारदा देवी कोचर गंगाशहर निवासी के नूतन गृह प्रवेश का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा 'जैन संस्कारक' देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **उदयपुर।** ललित-जय कंठालिया के नवीन गृह का शुभारंभ रॉयल अल्पाइन, राजकमल होटल के पीछे भुवाना में जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज भंडारी और भूपेश खमेसरा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं लोगस पाठ, पार्श्वनाथ स्तुति, मंगल भावना, संकारको द्वारा आशीर्वाद, महावीर स्तुति के साथ सम्पूर्ण विधि विधान से कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **कोयंबतूर।** लाडनूं निवासी कोयंबतूर प्रवासी स्वर्गीय महेंद्र सुनीता बेंगानी के सुपुत्र श्रेयांश प्रियंका के कन्या का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक निर्मल बेगवानी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा मंगलभावना की स्थापना कर सपम्न करवाया।

अनुशासन और वात्सल्य का संगम

नई दिल्ली।

तेरापंथ धर्म संघ की आठवीं साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी के समाधि स्थल वात्सल्य पीठ का आज अध्यात्म साधना केंद्र तेरापंथ भवन परिसर दिल्ली में लोकार्पण हुआ।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के तत्वावधान में निर्मित इस समाधि के लोकार्पण कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा, हरियाणा से विधायक सावित्री जिंदल,स्थानीय विधायक कंवरलाल तंवर एवं अन्य लोक उपस्थित थे।लोकार्पण से पूर्व शासन श्री मुनि विमल कुमार जी, बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी, मुनि अभिजीत कुमार जी ने मंगल पाठ सुनाया। लोकार्पण के बाद महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुनि उदित कुमार जी ने साध्वीप्रमुखा श्री का गुणानुवाद करते हुए कहा-साध्वीप्रमुखा श्री कनक प्रभा जी का जीवन गुरुनिष्ठा और अनुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण था।

उन्होंने आधी सदी तक शासन की सेवा कर यह सिद्ध किया कि गुरु-आज्ञा ही जीवन का सर्वोच्च शिखर है।उन्होंने केवल नेतृत्व ही नहीं किया, बल्कि वात्सल्य से सबके हृदय को अप्लावित कर दिया। मुनि विमल कुमार जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा श्री का अनुशासन कठोर नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करने वाला आलोक था। कार्यक्रम में जैन श्वेतांबर तेरापथ महासभा के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन नाहटा, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के अध्यक्ष कन्हैलाल पटवारी, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, भवन व्यवस्थापक सुशील कोहाड़ आदि वक्ताओं ने साध्वीप्रमुखाश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला और उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
11 मई - 17 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

नंदनवन गण मंगलकारी प्रभु तेरी महिमा है न्यारी

● साध्वी मलयप्रभा ●

वर्धापन के उजले पल में, अर्पित भावों का उपहार।
धर्मसंघ के ओ चक्रीश्वर! जीओ-जीओ वर्ष हजार।।

शासन कितना गौरवशाली, बैठे गणनंदनवन डाली,
मन मैना है ये मतवाली, रहती आठोंयाम दीवाली,
जय ज्योति चरण जय महाश्रमण की, गूंजे भू नभ जय-जयकार।।

अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं तुम हो विभुवर!
धम्मदयाणं बोहिदयाणं, सरणदयाणं तुम हो प्रभुवर!
वीतराग सी मूरत पाकर, खिला-खिला ये गण मंदार।।

जहाँ कहीं पधराएं गणिवर, यश-ध्वज चलता आगे-आगे।
शिष्ट मिष्ट इष्ट वाणी सुन, जन-जन जागे दुर्गुण त्यागे।
महाश्रमणिक तव श्रम बूंदों से, उपकृत है सारा संसार।।

गण गोकुल घनश्याम दिखाते, संघ-चमन में नव्य नजारे।
योगक्षेम वर्ष वरदायी, जीवन की जो आभा संवारे।
भिक्षु जन्म त्रय शताब्दी अवसर, राजधानी में भव्य बहार।।

भरा हुआ गागर में सागर, जीवन तेरा क्या गुण गाऊं।
कहकर लिखकर गाकर भी मैं, रही अधूरी पार न पाऊं।
शब्दों का परिधान रिकाने, कहां सक्षम है तारणहार।।

युगों-युगों तक तपो धरा पर, प्रबल प्रतापी ओ कीर्त्तिधर!
रहो निरामय बनो चिरायु, दिव्य दिवाकर ओ शक्तिधर!
सुधा सन्निधि निर्मल आभा, बन जाएं शिव सुख दातार।।
कृपा दृष्टि की नेहिल नजरें, चाहूं बस यूं ही हर बार।।

नंदनवन गण मंगलकारी प्रभु तेरी महिमा है न्यारी

● समणी मृदु प्रज्ञा ●

नंदनवन गण मंगलकारी प्रभु तेरी महिमा है न्यारी
ॐ शरणम गुरुवर शरणम्, महाश्रमण जय तव शरणम

निर्मल शीतल तेरा साया पावन चरणों में शीश नवाया
अयोध्या जैसा समवशरण संघ अधिनायक अभिनंदन

आगम प्रवचन कथा सुखदायी नैया सबकी पार लगाली
जिनवाणी अमृतरस तीर्थंकरों का करें हम ध्यान

श्री सुखमंगल पाठ आशीर्वर जनकल्याण करवाते गुरुवर
चरण स्पर्श करवाते गुरुवर
त्याग तपस्या प्रत्याख्यान, गुरु दर्शन ही चारों धाम

लय : मंगल भवन

शासन उपवन रा मंदार थांस्युं नन्दन वन गुलजार

● साध्वी मधुस्मिता ●

शासन उपवन रा मंदार म्हारा वांछित फल दातार।
शासन उपवन रा मंदार थांस्युं नन्दन वन गुलजार।।
गौरव शिखरां चढ़ावां म्हें, मंगल शंख बजावां म्हें॥ १ ॥

थारै दिल दरियै में इमरत लहरावै दिन रात।
प्राणी मात्र पर अनुकम्पा री करो सतत बरसात।
देव कुंवर सो मुख मनहर नयन कमल हैं सदाबहार॥ २ ॥

हिमगिरी सी उत्तुंग साधना अद्भुत समता भाव।
तीर्थेश्वर सम कल्याणी वाणी रो गजब प्रभाव।
पीकर शान्त सुधारस धार सारी दुनियां शुक्रगुजार॥ ३ ॥

महातपस्वी पुरुष प्रतापी भास्कर सा द्युतिमान।
यायावर बण तीन देश नै दिया तीन अवदान।
तम में पसरयो प्रखर प्रकाश आयो पतझड़ में मधुमास॥ ४ ॥

योगक्षेम वर्ष शुभ अवसर सभा सुधर्मा खास।
संघ सदन री च्यारूं कूंठां फैल्यो हर्षोल्लास।
धरती अम्बर गूंजै आज युग-युग जीओ गण सरताज॥५।।

तर्ज : नीला घोड़ा रा..

निर्मलता, गंभीरता और तेजस्विता के मूर्त रूप हैं आचार्य श्री महाश्रमण

सूरत।

मुनि मदन कुमारजी ने कहा कि ज्योतिपुंज आचार्य श्री महाश्रमण निर्मलता, गंभीरता और तेजस्विता के मूर्त रूप हैं। उनमें चन्द्रमा जैसी निर्मलता, सागर जैसी गंभीरता और सूर्य जैसी तेजस्विता के एक साथ दर्शन किये जा सकते हैं। मुनि मदनकुमारजी आचार्य श्री महाश्रमण के 53 वें दीक्षा-दिवस कार्यक्रम में बोल रहे थे। मुनि ने कहा कि दीक्षा पुनर्जन्म है और अध्यात्म का उन्नयन है। दीक्षा अमरत्व की साधना है और व्रतों की आराधना है। मुनि मदन कुमारजी ने कहा कि महाश्रमणजी के जीवन में पुण्यवत्ता, पवित्रता और पुरुषार्थ का त्रिवेणी संगम है। वे एक अकिंचन महापुरुष हैं और अप्रमत्त साधक हैं। वे अपने दस पूर्वाचार्यों के प्रति अत्यंत कृतज्ञ हैं तथा जन जागरण का महान कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में मुनि संयमकुमारजी और मुनि कल्प कुमारजी ने उद्गार व्यक्त किये तथा तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नमन मेड़तवाल ने महाश्रमणोऽस्तु मंगलम् के लिये आह्वान किया।

मुख्य मुनि के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

महायशस्वी महामनस्वी क्रमशः पाये नाथ

● मुनि कमल कुमार ●

भिक्षु शासन का सुयश, सुनते हैं दिन-रात
महायशस्वी महामनस्वी क्रमशः पाये नाथ

क्रमशः पाये नाथ संघ की रक्षा करते
एक एक सदस्य में गहरे संस्कार हैं भरते
इसी लिए ही भिक्षु गण में प्रतिदिन स्वर्ण प्रभात
भिक्षु शासन का सुयश सुनते हैं दिन-रात ॥१॥

महाश्रमण का दिल दिमाग है उर्वर और विशाल
नये नये आयाम चलाकर गण को किया निहाल
गण को किया निहाल मुख्य मुनि चयन निराला
एक एक चिंतन गुरुवर का लगता आला
जिनके दूरदर्शी चिंतन से हैं सारे खुशहाल
महाश्रमण का दिल दिमाग है उर्वर और विशाल ॥२॥

पूर्वांचल के असम प्रांत में वर पधारें गाम
जहाँ नियुक्ति की गुरुवर ने प्रकट हर्ष प्रकाम
प्रकट हर्ष प्रकाम सुयश चहुँदिशि में छाया
गुरु दृष्टि अमृत की वृष्टि जन-जन ने यह गाया
रोम-रोम में अभिनव खुशियाँ कहते लोग तमाम
पूर्वांचल के असम प्रांत में वर पधारें गाम ॥३॥

महावीर मुनि मुख्य मुनि हैं जन-जन के उद्गार
महाश्रमण गुरुवर का गण को यह अनुपम उपहार
यह अनुपम उपहार बड़ा ही उज्वल जीवन
प्रवचन और संगीत श्रवण कर सारे धन-धन
है आचार विचार आपका निर्मल गंगाधार
महावीर मुनि मुख्य मुनि हैं जन-जन के उद्गार ॥४॥

ज्ञान ध्यान स्वाध्याय आपका चलता है निर्बाध
शुद्ध सेवा का मिलता रहता नित प्रसाद अविवाद
नित प्रसाद अविवाद खूब गंभीर धीर हैं
महाश्रमण की मुख्य कृति मुनि महावीर हैं
जागृत जीवन देखना हर क्षण किंचित नहीं प्रमाद
ज्ञान ध्यान स्वाध्याय आपका चलता है निर्बाध॥ ५॥

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

प्रज्ञा निलयं में खुशियों का सागर लहराया

● साध्वी मधुस्मिता ●

प्रज्ञा निलयं में खुशियों का सागर लहराया।
नई बहारें कुदरत का कण-कण है मुस्काया ॥ १ ॥

उज्जवलतम आचार तुम्हारा प्रेरक बनता है क्षण-क्षण
सौम्यमूर्ति व्यवहार समुन्नत बात-बात में अपनापन
युग अनुरूप प्रशिक्षण प्रवचन सबके मन भाया ॥ २ ॥

स्वाध्यायी बहुश्रुत समयज्ञा सतीशेखरा लो वन्दन
आज्ञा मर्यादा गुरुनिष्ठा तप जप से भावित चेतन
उच्च साधना के प्रयोग है कल्पवृक्ष छाया ॥ ३ ॥

अभिनन्दन की पावन बेला आस्था थाल सजा लाए
रहो निरामय बनो शतायु चयन दिवस पर हम गाएं
चन्देरी, मोदी परिकर यश परचम फहराया ॥४।।

तर्ज : अणुव्रत है सोया

तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

शिसोदा। संस्था शिरोमणि तेरापंथ महासभा के निर्देशानुसार आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी के संदर्भ में तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन पूरे देश भर में किया जा रहा है। इसी क्रम में शिसोदा ग्राम में भी इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण के द्वारा किया गया। मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उपासक प्रवक्ता सुरेश कुमार बाफना उपस्थित रहे। उन्होंने जैन धर्म , तेरापंथ दर्शन आचार्य भिक्षु द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत लौकिक एवं लोकोत्तर तथा तेरापंथ के मौलिक सिद्धांतों की व्यवस्थित रूप से श्रावक समाज को जानकारी प्रदान की। महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष फूलचंद छतरावत ने कार्यशाला के उद्देश्य की जानकारी श्रावक समाज को बतलाई। महासभा प्रभारी एवं कार्य समिति सदस्य कांतिलाल धाकड़ का इस कार्यशाला के आयोजन में सक्रिय भूमिका रही। आभार ज्ञापन इंद्रमल मीठालाल धाकड़ द्वारा किया गया।

शासनश्री साध्वीश्री चन्दनबाला जी के प्रति हृदयोद्गार

हमारे धर्मसंघ की एक वरिष्ठ और विशिष्ट साध्वी

● साध्वी वर्धमानश्री ●

शासन श्री साध्वी श्री चन्दनबाला जी हमारे धर्मसंघ की एक वरिष्ठ और विशिष्ट साध्वी थीं। उनका जीवन आदि से अंत तक श्रम की कहानी कहता है। उनका उर्जस्वल व्यक्तित्व उनके हर कार्य में मुखरित होता था। उनके हर कार्य में कला के दर्शन होते थे—चाहे पात्र-पात्रियों या मुख-वस्त्रिकाओं की रंगाई का कार्य हो या वस्त्रों की सिलाई का, वे हर कार्य में माहिर थीं। गण के प्रति और गुरु के प्रति उनकी अनन्य भक्ति थी। शासन श्री चन्दनबाला जी को तीन-तीन आचार्यों की सुखद सन्निधि प्राप्त हुई तथा उन्होंने तीनों आचार्यों की अनन्य कृपादृष्टि की पात्रता हासिल की। वे तीन-तीन साध्वी प्रमुखाओं व साध्वीवर्या की भी कृपापात्र बनीं। समस्त साधु-साध्वी समाज की वे कृपादृष्टि की पात्र बनीं। उनकी गुणवत्ताओं, क्षमताओं, निःस्वार्थ सेवा, गुरु भक्ति व संघ भक्ति में उनके व्यक्तित्व की गहराई मिलती है। सरलता, सहिष्णुता, मिलनसारिता और मधुर-भाषिता उनकी सुंदर पहचान थी। मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थ भावना उनके रग-रग में रमी हुई थी। उनके लिए सब—अपने-पराये, छोटे-बड़े—समान थे; उनके दिल में कोई भेदभाव नहीं था। छोटी से छोटी साध्वी हों या मुनिश्री, सबको वे अपनी वत्सलता और उदारता से रिझा लेती थीं। वे दिल की बहुत उदार थीं। उन्हें देना बहुत प्रिय था, वे किसी के श्रम की वस्तु लेना नहीं चाहती थीं। उनकी श्रम निष्ठा इतनी उच्च थी कि वे चाहती थीं सारा कार्य स्वयं ही कर लें। मौका मिलते ही वे कार्य अपने हाथ में ले लेती थीं। वे अत्यंत श्रमशीला थीं। वे किसी से नाराज़ नहीं होती थीं। उनसे कोई अच्छा व्यवहार करे या बुरा, वे साम्य भाव में रहती थीं। आचार निष्ठा, व्यवहार निष्ठा, संघ निष्ठा और गुरु निष्ठा उनके रोम-रोम में बसी हुई थी। बहिर्विहार में भी जितने भी सन्त या साध्वियाँ मिलते, वे उनकी तहे दिल से सेवा करतीं। उन्हें इतनी खुशी होती मानो उन्होंने पैरों में घुंघरू बाँध लिए हों। वे बड़े प्यार से उन्हें खिलाती-पिलातीं, उनके लिए भेंट (गिफ्ट) तैयार करतीं और उन्हें साथ रहने का आग्रह करतीं। स्थान कम हो या ज्यादा, वे पधारने वालों की सुविधा का ही ध्यान रखती थीं। शासन श्री का जीवन प्रेरक संस्मरणों से भरा पड़ा है। उनका जन्म हरियाणा प्रान्त के 'छात्तर' ग्राम में हुआ था। उनका चाँद सा मुखड़ा देखकर नाम 'चाँद कंवर' रखा गया। जन्म के एक महीने बाद पूरा परिवार भारत की राजधानी दिल्ली में प्रवासित हो गया। अपने माता-पिता की चतुर्थ पुत्री होने पर भी उनका लालन-पालन पुत्रवत हुआ। उनकी माता का नाम श्रीमती चमेली देवी व पिता का नाम श्रीमान उग्रसेन था। स्कूल के वार्षिक जलसे में जम्बु स्वामी का रोल अदा करने पर उनके अंतःकरण में वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। दीक्षा की आज्ञा न मिलने पर उन्हें एक वर्ष तक कड़ा संघर्ष झेलना पड़ा। सुश्री चाँद ने पानी, रोटी, नमक और मिर्च के अलावा सभी वस्तुओं का त्याग (परिहार) कर दिया। आखिर पाषाण हृदय को पिघलना पड़ा और उनकी दीक्षा संवत् 2016 में आचार्य तुलसी के कर-कमलों से कोलकाता में हुई। उस समय दीक्षा का उत्कट विरोध हो रहा था, किंतु साध्वी श्री प्रतिभा-संपन्न थीं। उन्होंने स्कूल में हिन्दी विषय में 'रत्न' का कोर्स किया हुआ था। उन्होंने विरोध करने वाले व्यक्तियों की जिज्ञासाओं का सटीक उत्तर देकर सबको निरस्त कर दिया। गुरुदेव उन्हें वात्सल्य से 'दिल्ली वाली' कहकर पुकारते थे। चूँकि आचार्य तुलसी स्वयं कलाप्रिय थे, अतः वे उनके मन भा गईं। आचार्य तुलसी की मुँहपत्तियों, पात्रों, प्यालों और गिलासों की रंगाई तथा उनके वस्त्रों की सिलाई का कार्य प्रायः उन्हीं के कुशल हाथों से संपन्न होता था। आचार्य प्रवर की गोचरी का कार्य भी 16 वर्षों तक उन्हीं के द्वारा हुआ। आचार्य तुलसी ने उनके लिए फरमाया था कि वे भगवान महावीर की चन्दनबाला थीं और ये 'तुलसी की चन्दनबाला' हैं।

2023 के मुम्बई चातुर्मास में भगवती संवत्सरी के कार्यक्रम में महातपस्वी आचार्य महाश्रमण ने उन्हें 'शासन श्री' के अलंकरण से विभूषित किया था। साध्वी श्री ने आचार्य तुलसी के साथ-साथ आचार्य महाप्रज्ञ की भी गोचरी और सेवा का कार्य पूरी निष्ठा से किया। आचार्य महाश्रमण करुणा के महावतार हैं। शासन श्री की गुरु भक्ति, संघ भक्ति, श्रमनिष्ठा व उनकी सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए आपने उन्हें 'शासन श्री' का खिताब देकर समलंकृत किया तथा उनको सेवा केन्द्रों में सेवा की बख्शीश प्रदान की।

शासन श्री ने तीन-तीन साध्वी प्रमुखाओं की भी सुखद सन्निधि में रहकर अपनी बहुमूल्य सेवाएं देकर सबका कृपापूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त किया। साध्वी प्रमुखा लाडां जी उन्हें प्यार से 'चंदा मामा' कहकर पुकारती थीं। चाहे पद-प्रक्षालन का कार्य होता या कोई अन्य कार्य, आप फरमाते—'चन्दा मामा को आने दो।' उनके कलात्मक व मुलायम हाथों का स्पर्श उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

शासन माता साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी तो उनके साथ-साथ ही पारमार्थिक शिक्षण संस्था में भर्ती हुई थीं। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ती थीं और उन दोनों में कॉम्पिटिशन चलता था। कभी शासन माता जी फर्स्ट आ जातीं, तो कभी शासन श्री। शासन माता जी की उन पर अत्यन्त कृपा थी। एक बार का संस्मरण है—सन् 2010 का चातुर्मास पूज्यवर का हैदराबाद में था। उस समय शासन माता जी का कक्ष 6-7 सीढ़ी चढ़कर था। शासन श्री विहार सम्पन्न कर शासन माता जी को वन्दना करने के लिए पधार रही थीं। शासन माता जी ने उन्हें दूर से देखा और तत्काल प्रातरास (नाश्ता) करते हुए बाहर पधारीं। उन्होंने शासन श्री से फरमाया— 'अभी ऊपर नहीं आना है।' फिर विनोद में पुनः फरमाया— 'अभी ऊपर जाने की देरी है (अर्थात् अभी आयु शेष है)।' यह सुनकर सारा वातावरण प्रसन्नता से भर गया। आप समय-समय पर उनके लिए, उनके अनुकूल खाद्य-पदार्थ भिजवाते रहते थे। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी भी उनसे बहुत प्रसन्न रहती थीं। सन् 2015 के कोबा चातुर्मास में आपने उन्हें बहिर्विहारी होने के बावजूद अपने निकटवर्ती कक्ष में ठहराया, जबकि अन्य सभी बहिर्विहारी साध्वियों को अन्य ब्लॉक में ठहराया गया था। शासन श्री ने अपने संपर्क में आने वाले सभी साधु-साध्वियों के दिल में स्थान बनाया। इतना ही नहीं, श्रावक-श्राविकाएं भी उनकी उपासना कर अति प्रसन्न होते थे। मैंने उन्हें कभी भी किसी श्रावक-श्राविका को यह कहते हुए नहीं सुना कि उनकी सेवा हो गई, अब उनके प्रतिक्रमण या प्रतिलेखना का समय हो गया है। उनके जीवन में अनेक डॉक्टरों से संपर्क हुआ। वे इतनी आत्मीयता से बात करती थीं कि सब उनके अपने हो जाते थे। मुंबई के हिंदुजा हॉस्पिटल की बात है, शासन श्री बी.पी. (B.P.) के अप-डाउन होने से बहुत परेशान थीं। वहाँ एक बहुत अनुभवी सीनियर डॉक्टर था, जिसकी फीस भी बहुत अधिक थी। साध्वी श्री ने उनसे कहा— 'आप यदि फीस लोगे तो गुरुदेव हमें पनिशमेंट (दंड) देंगे।' यह सुनकर डॉक्टर चकित रह गया। उसने कहा—'आप मेरी माँ के समान हैं, क्या मैं आपको पनिशमेंट दिलवाऊंगा? कभी नहीं।' और उसने एक ही झटके में सारी फीस माफ कर दी। इस प्रकार शासन श्री का जीवन महिमा-मंडित एवं बहुमुखी व्यक्तित्व का धनी था। उनकी गायन शैली, वक्तव्य शैली, प्रवचन शैली और रचना शैली बेजोड़ थी। जिस किसी क्षेत्र में उनका प्रवचन होता, जनता कहती— 'ऐसा लगता है, गुरु तुलसी फरमा रहे हैं।' वैसा ही जोश, वैसा ही उत्साह और वैसा ही सब कुछ। उनके संस्मरणों और उनके संदेशों का कोई आर-पार नहीं है।

किसी कवि ने ठीक ही लिखा है:

जितना भी लिखें,
लिखना शेष रह जाता।
तेरा ये विराट रूप,
कल्पना में नहीं समाता।।

वीरता को हम करें प्रणाम

● डॉ. साध्वी गवेषणाश्री ●

वीरता को हम करें प्रणाम,
शासनश्री चंदनबालाजी पहुंचे अपने मुकाम (धाम)।

गुरु तुलसी के करकमलों से संयम जीवन धारा,
पंच दशक गुरुकुल में रहकर जीवन खूब संवारा,
यौवन में संयम लेकर के, खूब किया है काम॥

तीन-तीन आचार्यों का शुभ वरदहस्त है पाया,
प्रथम साध्वी प्रमुखा की मिली सुखद शीतल छाया,
नंदनवन सम भिक्षु गण में चमकाया शुभ नाम॥

सहनशीलता, व्यवहार कुशलता, ऋजुता मृदुता भारी,
शासनसेवा, गुरुदृष्टि से सींची जीवन क्यारी,
भक्ति देखी तेरी निराली, मीरा ज्यूं घनश्याम॥

मौत महोत्सव बनी आपकी, अन्तिम कला सिखाई,
प्राण जाये पर प्रण नहीं जाये, खुद निष्ठा दिखलाई,
आधि व्याधि और उपाधि में, समता अविराम॥

रंगाई सिलाई हस्तकला में अव्वल नंबर,
संस्कारों के बूंदों से भरा संघ समन्दर,
फूर्ति तन पर रही सदा, आलस का नहीं है काम॥

भगिनी द्वय का अद्भुत जोड़ा इक झटके में तोड़ा,
तन कपड़ा बनकर के राजश्री ने अन्तस जोड़ा
प्रभाव, समीक्षा सिद्धि ने साता पहुंचाई प्रकाश ॥
(अहमदाबाद के श्रावकों ने साता पहुंचाई अविराम)

लय - धर्म की लौ जगाएं

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का सफल आयोजन

साउथ कोलकाता। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, साउथ कोलकाता (पद्मपुकुर) में किया गया। इस कार्यशाला का संयुक्त रूप से आयोजन TPF की कोलकाता एवं हावड़ा क्षेत्र की शाखाओं द्वारा किया गया। यह दिन भगवान महावीर के केवल ज्ञान दिवस के पावन अवसर के साथ-साथ आचार्य श्री महाश्रमण जी के 17वें पटोत्सव दिवस के रूप में भी मनाया गया।

इस गरिमामय अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ तथा युवक रत्न एवं वरिष्ठ उपासक राजेन्द्र सेठिया मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा मंगल पाठ से हुआ, जिससे संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत हो गया।

तत्पश्चात महावीर दुगड़ (उपासक) द्वारा मुख्य वक्ता का औपचारिक परिचय प्रस्तुत किया गया। इसके बाद नरेंद्र सिरोहिया (अध्यक्ष, TPF साउथ कोलकाता) ने स्वागत भाषण देते हुए मुख्य वक्ता, TPF के पदाधिकारियों, विभिन्न सभा-संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। कार्यशाला के दौरान तेरापंथ एवं जैन दर्शन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रमुख विषयों में शामिल थे- तेरापंथ के मूल सिद्धांत एवं जैन धर्म की आधारभूत अवधारणाएँ, दया का स्वरूप – लौकिक दया एवं लोकोत्तर दया, दान की अवधारणा – लौकिक दान एवं लोकोत्तर दान, तेरापंथ में प्रतिमा पूजा – भाव पूजा एवं द्रव्य पूजा का विवेचन, तेरापंथ दर्शनः धर्म की कसौटी, साध्य और साधन की मीमांसा, संपूर्ण सत्र में प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। सत्र के पश्चात मुनिश्री जिनेश कुमार जी द्वारा पाथेय प्रदान किया गया।

संबोधि

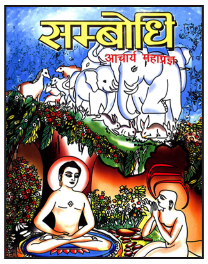

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

शरीर के इन स्थानों में चेतना की विशिष्ट अभिव्यक्ति होती है। एकाग्रता से उनका जागरण होता है। ये चैतन्य-केन्द्र हैं। योग में जो षट् चक्र का उल्लेख है वे विशिष्ट चेतना केन्द्र हैं। ये चक्र स्थूल शरीर में नहीं, किन्तु सूक्ष्म शरीर में है। मूलाधार चक्र सबसे निम्न है और सहस्रार सबसे ऊपर। शक्ति का प्रवाह मूलाधार में केन्द्रित है। कुंडलिनी शक्ति यहीं विराजमान है। यह सुषुप्त है। साधना का व्यक्त या अव्यक्त कार्य इस महाशक्ति को सहस्रार में ले जाने का है। यह नीचे से जब ऊपर की ओर उठती है तब एक-एक चक्र में से होकर प्रवाहित होती है। अनुभवी साधकों ने इसका कहीं-कहीं कुछ वर्णन किया है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने भी इसकी चर्चा की है। उनका कहना है कि कुंडलिनी के जागृत हुए बिना चेतना नहीं आती। कुंडलिनी को चेतन करना आवश्यक है। जब यह चक्रों के मध्य से होकर ऊपर जाती है, तब जो अनुभव होता है, वह इस प्रकार है- 'मनुष्य के मन की स्वाभाविक गति नीचे की तीन भूमिकाओं (गुह्य, लिंग और नाभि) में रहती है। जिससे वह भोग-विलास, खाने-पीने आदि की वृत्तियों से ऊपर नहीं उठ पाता। मन इन तीनों भूमिकाओं को पार कर हृदय-भूमि तक आ जाए तो उसे ज्योति-दर्शन होता है। परन्तु यहां से भी पुनः नीचे आने की संभावना रहती है। हृदय सें ऊपर विशुद्धिचक्र तक यदि मन की गति हो जाए तो उसे ईश्वरीय विषय की चर्चा के सिवाय दूसरी बातों में रस नहीं आता। उस समय कोई अन्य इच्छा नहीं रहती। विषयी लोगों के देखते ही डर से छिप कर बैठ जाता है। सम्बन्धी जनों से भी मिलने का मन नहीं होता। उनको देखते ही दम घुटने लग जाता था। कुंडलिनी कंठचक्र तक जाने के बाद भी नीचे की भूमि पर उतरने की संभावना बनी रहती है। साधक को इस समय सावधान रहना चाहिए। कंठचक्र को छोड़कर यदि एक बार भृकुटी आज्ञाचक्र तक आ जाए तब फिर पतन होने का भय नहीं रहता। वहां पर परमात्मा का दर्शन होकर निरन्तर समाधि-सुख की प्राप्ति होती है। उस भूमि और सहस्रार के मध्य में केवल एक कांच के समान पारदर्शक पर्दा मात्र रहता है। वहां परमात्मा इतने समीप रहता है कि हम परमात्मा के साथ एक रूप से प्रतीत होते हैं, किन्तु एकत्व प्राप्त नहीं होता है। यहां से यदि मन नीचे उतरे तो कंठ या हृदय से भी नीचे नहीं उतरता। इक्कीस दिन तक निरन्तर समाधि अवस्था में रहने से यह पर्दा सर्वथा नष्ट हो जाता है, और जीवात्मा परमात्मा के साथ एक रूप हो जाता है। यह सहस्रार कमल ही सप्तम भूमि है।'

इससे हम सहज अंकन कर सकते हैं कि साधना द्वारा व्यक्ति कैसे अपना संपूर्ण विकास साध लेता है। यह शक्ति सबमें है। किन्तु अधिकांश व्यक्ति नीचे की स्थिति में ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर देते हैं। ऊर्जा का केन्द्र मूलाधार चक्र सुप्त का सुप्त रह जाता है। शक्ति से परिपूर्ण होकर मनुष्य का अवतरण होता है और वह खाली होकर शक्ति शून्य होकर पुनः जन्म लेने के लिए चल पड़ता है। ऊर्जा का व्यय व्यर्थ के कार्यों में कर सार्थक से वंचित रह जाता है। साधना का अर्थ है- ऊर्जा का सम्यक् उपयोग करना। वह बाहर के अर्थहीन भोग विलास, घृणा, हिंसा, क्रोध, अहंकार आदि में शक्ति को योजित न होने देकर निर्माण में योजित करती है, मूलाधार से सहस्रार में स्थापित कर देती है। चक्रों पर ध्यान का यही उद्देश्य है। पिंडस्थ के प्रयोग नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो साधकों द्वारा निर्दिष्ट हैं-

(१) मूलाधार चक्र भगाकृति है। इस चक्र में स्वयंभूलिङ्ग में तेजोरूपा कुंडलिनी शक्ति साढ़े तीन फेरे लपेटे हुए अधिष्ठित है। इस ज्योतिर्मयी-शक्ति का जीव रूप में ध्यान करने से चित्त लय होता है, एवं मुक्ति मिल जाती है।

(२) स्वाधिष्ठान चक्र को अवालांकुर जैसे उड्डीयान नामक पीठ (आसन) पर कुण्डलिनी शक्ति का चिंतन करने से भी मनोलय होगा एवं जगत् के आकर्षण की शक्ति आयेगी।

(३) मणिपुर चक्र में पांच फेरे लगाए बिजली जैसे रंग की चित्स्वरूपा भुजंगी शक्ति का ध्यान करने से अवश्य ही साधक सर्वसिद्धि पाता है।

(४) अनाहत चक्र में ज्योति स्वरूप हंस का ध्यान करने से भी चित्त हो जाता है एवं जगत् वशीभूत होता है।

(५) विशुद्ध चक्र में निर्मल ज्योति का ध्यान करने से सर्व सिद्धियां मिलती हैं।

(६) तालुमूल के ललना चक्र को घण्टिका स्थान और दशम द्वार-मार्ग कहते हैं। इस चक्र पर ध्यान लगाने से मुक्ति मिलती है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

समता के तीन आयाम

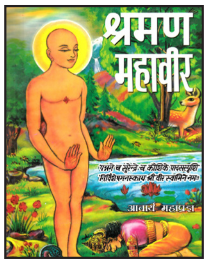

'वह है, भंते !'

'उस मिट्टी का भैंसा नहीं बनाया जा सकता?'

'भंते! बनाया जा सकता है।'

'इसलिए मैं कहता हूं कि कालसौकरिक दिन-भर भैंसों को मारता रहा है।'

सम्राट् इस सत्य को समझ गया कि दण्ड-बल से हिंसा नहीं छुड़ाई जा सकती। वह हृदय-परिवर्तन से ही छूटती है। सम्राट् ने अन्धकूप के पास जाकर मरे हुए भैंसों को देखा और देखा की कालसौकरिक के क्रूर हाथ अब भी उन्हें मारने में लगे हुए हैं। सम्राट् ने उसे मुक्त कर दिया।

कुछ वर्षों बाद कालसौकरिक मर गया। यह दुनिया बहुत विचित्र है। इसमें कोई भी प्राणी अमर नहीं होता। एक दिन मारने वाला भी मर जाता है। लोगों ने सुना, कालसौकरिक मर गया। परिवार के लोग आए और उसका दाह-संस्कार कर दिया।

सुलस कालसौकरिक का पुत्र था। परिवार के लोगों ने उससे पिता का पद संभालने का अनुरोध किया। सुलस ने उसे ठुकरा दिया। 'मैं कसाई का धन्धा नहीं कर सकता।' उसने स्पष्ट शब्दों में अपनी भावना प्रकट कर दी।

परिवार के लोग बड़े असमंजस में पड़ गए। सारा काम ठप्प हो गया।। उन्होंने फिर अनुरोध किया। सुलस ने विनम्र शब्दों में कहा- 'मुझे जैसे मेरे प्राण प्रिय हैं वैसे ही दूसरों को अपने प्राण प्रिय हैं। फिर मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए दूसरों के प्राण कैसे लूट सकता हूं?

स्वजन-वर्ग ने प्राणी-हिंसा में होने वाले पाप के विभाजन का आश्वासन दिया। उन्होंने एक भैंसे को मारकर कार्य प्रारम्भ करने का अनुरोध किया। सुलस ने अपने पिता के कुठार को हाथ में उठाया। स्वजन-वर्ग हर्ष से झूम उठा। सुलस ने सामने खड़े भैंसे को करुणापूर्ण दृष्टि से देखा और कुठार अपनी जंघा पर चलाया। वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। जंघा से रक्त की धार बह चली। थोड़ी देर बाद वह सचेत हुआ। वह करुणापूर्ण स्वर में बोला- 'बंधुओं! यह घाव मुझे पीड़ित कर रहा है। कृपया आप मेरी पीड़ा को बटाएं, जिससे मेरी पीड़ा कम हो।' 'स्वजन-वर्ग ने खिन्न मन से कहा- 'यह कैसे हो सकता है? पीड़ा को कैसे बांटा जा सकता है?' सुलस बोल उठा- 'आप लोग मेरी पीड़ा का विभाग भी नहीं ले सकते तब मेरे पाप का विभाग कैसे ले सकेंगे? मैं इस हिंसा को नहीं चला सकता, भले फिर यह पैतृकी हो। क्या यह आवश्यक है कि पिता अन्धा हो तो पुत्र भी अन्धा होना चाहिए।'

२. अभय का आयाम

अर्जुन मालाकार आज बड़ी तत्परता से अपनी पुष्पवाटिका में पुष्प चुन रहा है। बंधुमती छाया की भांति उसके पीछे चल रही है। उसका मन बहुत उत्फुल्ल है। राजगृह के कण-कण में उत्सव अठखेलियां कर रहा है। उसका हर नागरिक सुरभि-पुष्पों के लिए लालायित हो रहा है। 'आज पुष्पों का विक्रय प्रचुर मात्रा में होगा' इस कल्पना ने अर्जुन के हाथों और पैरों में होड़ उत्पन्न कर दी। थोड़े समय में ही चारों करंडक पुष्पों से भर गए। मालाकार-दंपती पुलकित हो उठा।

अर्जुन पुष्पवाटिका में पुष्प चुनकर यक्ष की पूजा करने जाया करता था। मुद्गरपाणि उस प्रदेश का सुप्रसिद्ध यक्ष है। उसका आयतन पुष्पवाटिका से सटा हुआ है। अर्जुन यक्ष का भक्त है। यह भक्ति उसे वंश-परम्परा से प्राप्त है।

राजगृह में ललिता नाम की एक गोष्ठी थी। उसके सदस्य गोष्ठिक कहलाते थे। उस दिन छह गोष्ठिक पुरुष यक्षायतन में क्रीड़ा कर रहे थे। अर्जुन अपनी नित्य-चर्या के अनुसार यक्ष को पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए यक्षायतन में प्रविष्ट हुआ। वह नहीं जानता था कि आज नियति ने उसके लिए पहले से ही कोई चक्रव्यूह रच रखा है।

गोष्ठिक पुरुषों ने अर्जुन के पीछे बंधुमती को आते देखा। उनकी काम-वासना जागृत हो गई। वे यक्षायतन के प्रकोष्ठ में छिप गए। मालाकार पुष्पांजलि अर्पण के लिए नीचे झुका। उस समय छहों पुरुष बाहर निकले और मालाकार को कसकर बांध दिया।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

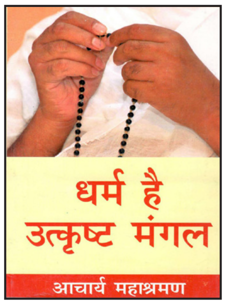

-आचार्यश्री महाश्रमण

दीक्षा

दीक्षा एक मार्ग है अपने आप पर नियंत्रण पाने का, भोगमुक्त एवं योगयुक्त जीवन जीने का। वैसे दीक्षा व संन्यास की परम्परा प्रायः सभी धर्मों में है। जैन-धर्म में दीक्षा मुख्यतया दो प्रकार की है-महाव्रत दीक्षा और अणुव्रत दीक्षा। इसे दूसरे शब्दों में मुनि दीक्षा और श्रमणोपासक दीक्षा भी कहा जा सकता है। मुनि-दीक्षा स्वीकार करने वाला व्यक्ति यावज्जीवन के लिए गृहस्थ-जीवन को छोड़ संन्यासी का जीवन जीता है। उसके मुख्य नियम पांच हैं-अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये पांच महाव्रत कहलाते हैं। श्रमणोपासक दीक्षा स्वीकार करने वाला व्यक्ति एक सीमा तक इनकी पालना करता है, इसलिए उसके लिए पांच अणुव्रत पालनीय होते हैं।

दीक्षित साधक का कर्तव्य होता है नित्य तपस्या, साधना के वे प्रयोग करना जिससे आन्तरिक बंधे संस्कार क्षीण हों एवं सत्संस्कार सृजित हों। साधना करता-करता साधक उन आत्मिक सुखों का साक्षात्कार कर लेता है जो सहज, स्थायी एवं अन्यत्र अलभ्य होते हैं। महाव्रत दीक्षा हर आदमी के लिए सम्भव नहीं है, पर अणुव्रत दीक्षा एक मध्यम मार्ग है। उसे स्वीकार कर एक साधारण व्यक्ति भी उन्नत जीवन जी सकता है।

युवक कौन?

दुनिया का कोई भी व्यक्ति बुढ़ापा नहीं चाहता। सबको यौवन प्रिय है। अनुसंधानकर्ता ऐसे उपायों की खोज में लगे हुए हैं, जिनसे अवस्था आने के बाद भी बुढ़ापे को रोका जा सके।

युवकत्व और वृद्धत्व का सम्बन्ध अवस्था के साथ नहीं, हमारी मानसिकता के साथ है। कुछ व्यक्ति उम्र से वृद्ध होने पर भी युवक होते हैं और कुछ युवावस्था में भी वृद्ध होते हैं। युवकत्व के दो लक्षण हैं- उत्साह और साहस। जिस व्यक्ति में कार्य करने का उत्साह और साहस होता है वह अवस्था से चाहे वृद्ध भी हो, वस्तुतः वह युवक ही है। जो युवक उत्साह और साहस से विहीन तथा बुजदिल होता है, वस्तुतः उसे युवा कहलाने का अधिकार नहीं है। कहा भी गया है-

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमंति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्राम्भ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

निम्नस्तरीय व्यक्ति में न तो उत्साह होता है और न ही संघर्षों के साथ जूझने की शक्ति होती है, फलस्वरूप वह किसी महान् कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करता। मध्यम स्तर वाले व्यक्ति में नए-नए कार्य प्रारम्भ करने की, नई- नई योजनाएं निर्मित करने की शौक होती है और वह कार्यारम्भ भी कर देता है, किन्तु उसमें साहस नहीं होता, जिसके परिणामस्वरूप विघ्न उपस्थित होने पर प्रारम्भ की हुई आयोजना को वह बीच में ही तिलांजलि दे देता है। उत्तम श्रेणी के व्यक्ति में उत्साह और साहस दोनों होते हैं। वह कार्य को शुरू भी कर देता है और संघर्षों को साहस के साथ झेलता हुआ उसे पूरा भी कर देता है। युवक उत्तम श्रेणी का व्यक्ति होता है। वह बुझे हुए कोयले के समान नहीं, जलते हुए अंगारे के समान होता है।

जिस समाज में उत्साही और साहसी युवकों की टीम नहीं होती वह समाज विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। वह समाज प्रगति के नये-नये आयाम उद्घाटित नहीं कर सकता। उत्साह और साहस के साथ विवेक का होना भी बहुत जरूरी है। विवेक का अर्थ है-करणीय और अकरणीय का भेद ज्ञान। उत्साह और साहस अगर करणीय तथा हितकर कार्यों में होता है तो वह विकास का कारण होता है और वही उत्साह तथा साहस अकरणीय कार्यों मैं क्रियान्वित हो जाता है तो वह विनाश का कारण बन जाता है। अतः लक्षणसंपन्न युवक के लिए आवश्यक है कि वह विवेक के द्वारा करणीय और अकरणीय का भेद कर करणीय कार्यों को उत्साह और साहस के साथ संपन्न करे।

कार्यकर्त्ता के मौलिक गुण

जैन साहित्य में मूल गुण और उत्तर गुण दो शब्द मिलते हैं। मूल गुण वे होते हैं, जिनके बिना व्यक्ति का काम नहीं चलता। जीवन में उनकी अनिवार्यता होती है और उत्तर गुण वे होते हैं जो मूल गुणों को परिपुष्ट करते हैं। एक डॉक्टर को अपने विषय का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। अन्यथा ज्ञान के अभाव में वह सफल डॉक्टर नहीं हो सकता। इसी प्रकार कार्यकर्त्ता में भी कुछ मौलिक गुण होने चाहिए, जिससे 'कार्यकर्त्ता' नाम उसके लिए सार्थक हो सके।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मई 2026
सप्ताह के विशेष दिन

11 मई भगवान मुनिसुव्रत निर्वाण कल्याणक	**15 मई** भगवान शांतिनाथ जन्म एवं निर्वाण कल्याणक
15 मई भगवान शांतिनाथ दीक्षा कल्याणक	**16 मई** पक्खी
20 मई भगवान धर्मनाथ निर्वाण कल्याणक	**24 मई** भगवान वासुपूज्य च्यवन कल्याणक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
11 मई - 17 मई 2026

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

दक्षिण मुंबई

शासन श्री साध्वी शिवमाला जी के सानिध्य में परम पूज्य महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65 वे जन्म दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ साध्वी श्री ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया, मंगलाचरण सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया स्वागत सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने किया आचार्य महाश्रमण जी के जन्म से दीक्षा आचार्य पद की संक्षिप्त जानकारी दी। आज के इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दिलीप जी सरावगी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी कि अनुकंपा महायशस्वी महातपस्वी आदि गुरदेव की अनेक विशेषता के बारे में नई नई जानकारी दी,आप एक तत्वज्ञ श्रावक हे आपके द्वारा संकलित पुस्तक मेरे महाश्रमण भगवान का विमोचन साध्वी श्री के सानिध्य में किया। साध्वी अमित रेखा जी, शासन श्री साध्वी शिवमाला जी आचार्य महाश्रमण जी के आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना की आप युगों युगों तक संघ की सेवा करते रहे आप दीर्घायु हो,आपका स्वास्थ्य निरामय हो। इस अवसर पर फाउंडेशन के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, कार्याध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, कोषाध्यक्ष प्रकाश सिसोदिया, उपाध्यक्ष रमेश मेहता, दक्षिण युवक परिषद से अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया, कोषाध्यक्ष रौनक धाकड़, कार्यक्रम कुशल संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

कोयंबतूर

तेरापंथ भवन में तेरापंथ संघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का 17 वां पट्टोत्सव व 65 वे जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी आस्थाश्री जी ने स्व रचित गीत द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष देवीचंद मंडोत ने गुरुदेव के प्रति अपनी भावना व मंगलकामनाएं व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सुमधुर गीतिका के साथ ज्ञानशाला के बच्चों ने तेरापंथ का परचम लहराते हुए अच्छी प्रस्तुति दी। साध्वी आस्था प्रभाजी ने योगक्षेम वर्ष में, इस भरत क्षेत्र के सीमंधर स्वामी- आचार्य महाश्रमणजी के दर्शन करने की प्रेरणा दी। वह मिनिमम और मैक्सिमम के मैजिक के विषय में वक्तव्य प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद के संगान से भवन गूंज उठा। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के जीवनी के अनेक प्रसंग व पहलुओं का सुंदर चित्रण शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया। तपस्वी बहनों व तत्व विज्ञ बहनों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी दीक्षा प्रभाजी ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

तेरापंथ धर्मसंघ के महातपस्वी एवं युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के 65वें जन्मोत्सव एवं 17वें पट्टोत्सव के पावन उपलक्ष्य में राजराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में 'आचार्य महाश्रमण अभ्यर्थना समारोह' का आयोजन किया गया । नमस्कार महामंत्र से आरंभ हुए कार्यक्रम में कन्यामंडल द्वारा महाश्रमण अष्टकम द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने अपने वक्तव्य में पधारे हुए सभी अतिथियों का अभिनंदन करते हुए इस कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान करने हेतु मुनिश्री एवं साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। लहरसिंह जी सिरोया के प्रति आभार प्रकट किया। सभा की उपाध्यक्ष सरोज आर. बैद ने स्वरचित काव्य प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विक्रम महेर, महिला मंडल उपाध्यक्ष ममता दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री महाश्रमणजी के तप, त्याग, अनुशासन एवं अहिंसा पर आधारित जीवन-दर्शन को समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक बताया।

इस अवसर पर डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने कहा आचार्य श्री महाश्रमण जैन धर्म के प्रभावशाली आचार्य में एक है। वे आध्यात्म के प्रबल उन्नयन एवं युग के मार्गदर्शक हैं। वे जन-जन को सतत जागरूकता का संदेश दे रहे हैं।आचार्य श्री महाश्रमण जी को दो गुरुओं की कृपा एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आपकी विशेषता रही थी आपका जन्म, दीक्षा और आचार्य पद तीनों ही राजस्थान के सरदारशहर में हुआ। मुनिश्री ने गुरुदेव के प्रति अभ्यर्थना करते हुए कहा आचार्य श्री महाश्रमण जी की अध्यात्म निष्ठा, आज्ञा निष्ठा और संयम निष्ठा विशिष्ट है, इससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। आज जन्म दिवस एवं पट्टोत्सव दिवस के उपलक्ष में हम सभी मंगलकामना करते हैं कि आचार्य श्री स्वस्थ रहते हुए दीर्घकाल तक नए-नए इतिहास का सृजन करते रहे। मुनिश्री ने आचार्य महाश्रमण द्वारा की गई अहिंसा यात्रा का उल्लेख करते हुए बताया की आचार्य श्री ने पूरे भारत एवं विदेश नेपाल की धरती पर पदयात्रा करते हुए अभी तक लगभग 65,000 किलोमीटर पैदल चल चुके हैं। अहिंसा यात्रा के अंतर्गत एक करोड़ से अधिक लोगों को नशा मुक्ति एवं सद्भावना का संकल्प करवाया है। साध्वी पावनप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में आचार्य श्री के जीवन मूल्यों- संयम, नैतिकता एवं आत्म-विजय को अपनाने की प्रेरणा दी तथा कहा कि आचार्य महाश्रमण सत्य पुरुष के रूप में विख्यात है। वे एक वचन सिद्ध महापुरुष है। उनकी अध्यात्मयोगिता हम सबके लिए प्रेरणादाई हैं। आचार्य महाश्रमण पवित्रता एवं तेजस्विता के मूर्त रूप है। वर्तमान युग में आचार्य श्री का संदेश मानवता के लिए मार्गदर्शक है। नचिकेता मुनि आदित्य कुमारजी ने महाश्रमण अभिनंदन गीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरोया ने अपने संबोधन में आचार्य श्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सराहना करते हुए कहा कि उनका जीवन समाज में नैतिक जागरण का सशक्त माध्यम है। और उनकी सन्निधि में मुझे आत्मसंतोष का अनुभव होता हैं । उन्होंने आचार्य प्रवर के आगामी दिल्ली चातुर्मास में सभी को आमंत्रित भी किया। विशिष्ट अतिथि टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, अभातेमम की सहमंत्री मधु कटारिया, अभातेयुप संगठन मंत्री रोहित कोठारी एवं अणुव्रत सोसायटी राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश चावत, cps trainer दिनेश मरोठी ने भी अपने विचार रखते हुए आचार्य श्री के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया। गांधीनगर सभाध्यक्ष पारसमल भंसालीआदि की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी रम्यप्रभाजी और कार्यक्रम के संयोजक दिनेश मरोठी द्वारा किया गया । सभा मंत्री गुलाब बांठिया ने आभार ज्ञापित किया। सभी अतिथियों एवं उपस्थित जनों से आचार्य श्री महाश्रमणजी के आदर्शों- अहिंसा, संयम, सदाचार एवं नैतिकता को अपने जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया गया। आयोजन में तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद एवं सहयोगी संस्थाओं का सराहनीय योगदान रहा।

कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का 17 वाँ पट्टोत्सव सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में हर्षोल्लास पूर्वक आयोजित किया गया । इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - विलक्षण व नैसर्गिक प्रतिभा के धनी है - आचार्य श्री महाश्रमण। वे पापभीरू,आत्मार्थी, सहज, सरल, शांत व आचार सम्पन्न है। वे तीर्थंकर के प्रतिनिधि व छतीस गुणों के धारक हैं। धर्मसंध में आचार्य का स्थान सर्वोच्च होता है। वे न्यायविद व तटस्थ होते है। आचार्य की आठ गणि संपदा होती है यथा - आचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, मति, प्रयोग और संग्रह। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के चिंतन में गांभीर्य, दृष्टि में प्रसन्नता, व्यवहार में कुशलता है। वे संघ हितैषी हैं। उन्होंने पदयात्रा के जरिये जन-जन को अहिंसा, शांति व सदभावना का सन्देश प्रदान किया है। वे दो युगप्रधान आचार्यों (आचार्य श्री तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी) द्वारा निर्मित मूल्यवान कृति हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में पट्टोत्सव का विशेष महत्व है। आज हम आचार्य श्री महाश्रमण जी का 17 वाँ पट्टोत्सव मना रहे हैं। आचार्य श्री युगों-युगों तक धर्मशासन व मानव जाति की सेवा कराते रहें यही हम मंगल कामना करते हैं। मुनि परमानंद ने कहा- आचार्य श्री का पट्टोत्सव मनाकर हम सभी अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहें हैं। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। स्वागत भाषण साउथ कलकता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बिनोद कुमार चोरड़िया ने दिया। इस अवसर पर महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री चैनरूप चंडालिया, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कलकता साउथ के अध्यक्ष नरेन्द्र सिरोहिया, तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता की अध्यक्ष बिन्दु डागा, तेरापंथ युवक परिषद साउथ कलकत्ता के पूर्व अध्यक्ष मोहित बैद ने अपने विचार व्यक्त किये। अभ्यर्थना गीतों की प्रस्तुति के क्रम में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद व तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पदाधिकारियों व सदस्यों ने सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल साउथ कलकत्ता द्वारा "गाथा शिखर पुरुष की ' कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री कमल कोचर ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

हासन

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशांजी के पावन सानिध्य में हासन सभा भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, एवं पट्टोत्सव का कार्यक्रम बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया है। कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वी जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया। साध्वी श्री ने अपने, मंगल उद्बोधन में फरमाया आचार्य श्री रत्नत्रयी के रत्नाकर है ,सृजन के महासुमेरू है। करुणा के कीर्तिधर है। शक्ति के स्त्रोत है। आपके व्यक्तित्व का अनुजर संयम, खाद्य संयम, वॉकसंयम, निद्रा सयम, आगमिक ज्ञान, परम्पराओं का ज्ञान संधीय नीतियों का ज्ञान, शिक्षा, दिक्षा का ज्ञान यह पांचों आपके कीर्तिकार व्यक्तित्व को उजागर करते है। आप तेरापंथ धर्मसंघ के एक विलक्षण आचार्य है क्योकि आपका उत्तराधिकारी पत्र दो आचार्य द्वारा दो बार लिखा गया। क्रार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी वर्धमान यशा जी, साध्वी बोधि प्रभाजी ने 'तुलसी अष्टकम के द्वारा की. महिला मण्डल अध्यक्षा विनीता तातेड ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। महिला मण्डल और सभा की संयुक्त प्रस्तुति गीत के द्वारा कि गई। युवती मण्डल द्वारा महाश्रमणोस्त मंगलम् कार्यक्रम की सुन्दर प्रस्तुति दी गई।

साध्वी वर्धमान यशा जी एवं साध्वी बोधि प्रभा जी ने 'अर्हताओं के आलोक में आचार्य महाश्रमण कार्यक्रम की रोचक प्रस्तुति दी गई। विजयनगर बंगलूर से समागत उपासक भाई महेन्द्र दक ने अपने भावो की प्रस्तुति दी अन्त में मल्लनाड सभा के अध्यक्ष महावीर भंसाली, सभा अध्यक्ष सोहनलाल तातेड,मंत्री विमल कोठारी ने अभिव्यक्ति दी।क्रार्यक्रम का संयोजन साध्वी विनित्यशा जी कुशलता पूर्वक किया।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

तेरापंथ भवन, भेस्तान

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के पावन सान्निध्य में '53वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मन को बाबरी बनाएं तो राम मिल जाते हैं, मन को सुदामा बनाएं तो श्रीकृष्ण मिल जाते हैं। मन को चंदनबाला बनाएं तो महावीर मिल जाते हैं और मन को शुद्ध साफ बनाएं तो महाश्रमण मिल जाते हैं।

सरदारशहर का बालक मोहन के नाम का अर्थ क्या है? मोह + न = मोह नहीं किसी से करना। अनुत्तर व्यक्तित्व के महानायक हैं आचार्य महाश्रमण। नमन अनुत्तर संयम समता को। नमन अनुत्तर ऋजुता मृदुता को। नमन अनुत्तर आचार विचार कुशलता को। नमन अनुत्तर लब्धिधारी गरिमाधारी को। आचार्य महाश्रमण एक विलक्षण आचार्य हैं। वंदनीय हैं गुरुदेव का ध्रुवयोग, साम्ययोग, सत्ययोग एवं शिवयोग को। हमारे गणपाल चिरायु हों, शतायु हों। हम सबकी सिद्धपाल करते रहें। आचार्य महाश्रमणजी की अनमोल कृति हैं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी। आप एक दिव्य विभूति हैं। आपके जीवन में कई ऐसी खूबियां हैं जो आपको खूबसूरत बनाती रही हैं। आप समण श्रेणी से दीक्षित होने वाली पहली साध्वी हों। समणी नियोजिका पद को विभूषित करने वाली आप पहली समणी हैं। विनम्रता, विद्वता, सहिष्णुता, स्वाध्यायप्रियता आपके कर्तृत्व की ऊंचाई देने वाले पायदान हैं। साध्वी कुमुदप्रभ ने दीक्षोत्सव पर अपने आराध्य के प्रति एक मंगल पुरुष, स्वर्ण पुरुष, कोमल पुरुष आदि गुणों के बारे में विस्तार से बताया। साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने ठाणं सूत्र के आधार पर अपने आराध्य के कांत और प्रिय के आधार पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। डॉ. साध्वी परमयशाजी, विनम्रयशाजी, मुक्ताप्रभाजी और कुमुदप्रभाजी ने 'अष्ट संपदा के मालिक गुरुवर हमारे' गीत का सुमधुर संगान किया।

जयपुर

मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरूण' ने महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल में संबोधि सभागार में आयोजित मुख्य कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा - संत परंपरा के आदर्श हैं - संत आचार्य श्री महाश्रमण। भारतीय परंपरा में ऋषियों, मुनियों और संतों-महंतों की महान श्रेणी में संत आचार्य श्री महाश्रमण जी का नाम श्रद्धा से लिया जाता है। वे देश-विदेश में पदयात्रा करते हुए लाखों-लाखों लोगों को नशामुक्ति का संकल्प करा चुके हैं। वे अहिंसा यात्रा के माध्यम से मानवीय मूल्यों की स्थापना कर रहे हैं। जन-जन में नैतिकता, प्रामाणिकता के प्रति निष्ठा पैदा कर रहे हैं। समाज में साम्प्रदायिक सौहार्द, मानवीय एकता और अहिंसा की भावना को पुष्ट कर रहे हैं। वे स्वयं संयम व शांति की साधना करते हुए दुनिया को शांति का संदेश दे रहे हैं। ऐसे विश्व वंदनीय संत के संयम दिवस पर विश्व मानव अभिवादन एवं अभिनंदन करता है। मुनि श्री संभव कुमार जी ने कहा - आचार्य श्री महाश्रमण करुणा की गंगोत्री हैं। जिनका सम्पूर्ण जीवन परोपकार और मानवता को समर्पित है। मुनि जी ने बताया कि आचार्य महाश्रमण जी श्रीमद् भगवद् गीता के ज्ञाता-व्याख्याता ही नहीं बल्कि उनके जीवन व्यवहार में उसका साक्षात्कार भी होता है। वे निष्काम योगी और स्थित प्रज्ञता के प्रतिरूप हैं। आचार, विचार और व्यवहार की एकता के प्रतीक जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्य श्री महाश्रमण जी को शत-शत नमन करते हैं। कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा से मास्टर रतन जैन व महिला समाज की ओर से तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) अध्यक्षा कनक आंचलिया ने गीत से अपने श्रद्धा भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का प्रारम्भ तीर्थंकर पदम् प्रभु की स्तुति से हुआ। इस अवसर पर तेरापंथ संविधान का पाक्षिक वाचन भी किया गया।

हैदराबाद

जैन सेवा संघ रामकोट, हैदराबाद के विशाल हॉल में आचार्य श्री महाश्रमणजी के 65वें जन्मदिवस और 17वें पदाभिषेक दिवस का भव्य आयोजन 'महाश्रमणोत्सव' के रूप में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा-२ के सानिध्य में तेरापंथी सभा-सिंकदराबाद द्वारा आयोजित किया गया। मुनि दीप कुमारजी ने कहा -आचार्य श्री महाश्रमण जी स्व और पर कल्याण में रत है। स्वयं की आत्मा के कल्याण की उत्कृष्ट साधना कर रहे हैं तो दूसरों को भी आत्म कल्याण की दिशा में जीने का भारी प्रयत्न करा रहे हैं।

आचार्य श्री जहां धर्मसंघ के शासक है तो साधक भी हैं। मुनि काव्य कुमार जी ने संचालन करते हुए कहा - आचार्यश्री अनंत शक्ति के अक्षय स्रोत है । वे संघ के पावर हाउस है एवं पूरे संघ को पावर सप्लाई करते हैं । आचार्य प्रवर का जीवन अनेक विलक्षण विशेषताओं का पुंज है। तेरापंथी सभा सिंकदाबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, ते. यु.प. अध्यक्ष राहुल गोलछा , ते.म.म. मंत्री निशा सेठिया, TPF मंत्री अणुव्रत सुराणा, किशोर मंडल के किशोर ने भी गीतिका द्वारा अभिवंदना की। आभार ज्ञापन सभा मंत्री हेमंत संचेती द्वारा किया गया।

टिटलागढ़

मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी के पावन सानिध्य में भगवान महावीर स्वामी जी का केवलज्ञान कल्याणक दिवस के साथ-साथ आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65 वां जन्मोत्सव एवं 17वां पाटोसब दिवस मनाया गया।महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई ।स्थानीय सभा अध्यक्ष गौतम जैन नें पूज्य प्रवर के प्रति अपनी भावों की अभिव्यक्ति दी । मुनि हिमांशु कुमार जी ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि भगवान महावीर एवं आचार्य श्री महाश्रमण जी के जीवन में कई समानताएं हैं । आचार्य प्रवर का भी प्रभु के जैसे हृदय दया और करुणा का सागर है ,पूज्य गुरुदेव परिश्रम शिल है एवं संकल्प के पक्के हैं। मुनि हेमंत कुमार जी ने भगवान महावीर के केवल ज्ञान दिवस पर हुई आश्चर्यजनक चकित घटना का उल्लेख किया एवं तेरापंथ धर्म संघ में एक समय में एक आचार्य के शासन का उल्लेख किया।

राजलदेसर

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में महातपस्वी युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्म व पदाभिषेक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कमलयशा जी व साध्वी चैत्यप्रभा जी के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा - आचार्यश्री महाश्रमण जी एक ऐसे महापुरुष हैं, संत पुरुष हैं जिनका जीवन जन-जन के लिए एक प्रेरणा है। करुणा, सरलता, सहजता, निस्पृहता व विनम्रता आदि ऐसी विशेषताओं के महापुंज हैं आचार्यश्री महाश्रमण जी। जिनके व्यक्तित्व से केवल तेरापंथ संघ ही लाभान्वित नहीं हो रहा है बल्कि जैन-जैनेतर समाज भी युग प्रधान आचार्यश्री के प्रति नतमस्तक है। योगक्षेम वर्ष लाडनूं का वह भव्य नजारा आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुपम देन है जो संघ के साधु साध्वियों के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र के संवर्धन का आयाम बन रहा है। इस अवसर पर साध्वी कुशालप्रभा जी, साध्वी कीर्तिरेखा जी, साध्वी स्नेहप्रभा जी, तेरापंथ महिला मंडल, श्रावक चुन्नीलाल घोषल, मंजू देवी बाफना, मोनिका बैद आदि ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी इंदुयशा जी ने किया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल व मंत्री रजत बैद ने 'सम्यक दर्शन कार्यशाला' में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रशस्ति पत्र वितरित किए।

साउथ कलकता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का 65 वां जन्मोत्सव सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में साउथ कलकता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। अभ्यर्थना के अवसर पर उद्‌बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी कहा - आगम सूक्त के अनुसार ऋषि महान प्रसन्न चित्त वाले होते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण इस सूक्त के प्रतीक पुरुष हैं। उनमें चन्द्रमा जैसी निर्मलता, सूर्य जैसी तेजस्विता, सागर जैसी गंभीरता, मेरू जैसी ऊंचाई, आकाश जैसी व्यापकता, धरती जैसी सहनशीलता फूलों जैसी प्रसन्नता, बच्चों जैसी सरलता व नवनीत जैसी कोमलता के एक साथ दर्शन किये जा सकते हैं। उनका चुम्बकीय व्यक्तित्व सबको आकर्षित करने वाला व विराट प्रेरणा देने वाला है। उनका आभामंडल पवित्र एवं निर्मल है। वे साधना के शिखर पुरुष, त्रियोग साधक, रत्नत्रय साधक हैं। आज आचार्य श्री महाश्रमण जी का 65 वां जन्मोत्सव है। सामान्यतया व्यक्ति अपना ही जन्मदिन मनाता है किंतु महापुरुषों का जन्मदिन तो सभी मनाते हैं। आचार्यश्री का जन्म दिवस तप, त्याग व संकल्प ग्रहण कर मनाना चाहिए। मुनि परमानंद ने कहा-आचार्य श्री भारत भर भ्रमण कर एक नया कीर्तिमान बनाया है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

अभ्यर्थना के क्रम में महासभा के पूर्वन्यासी भंवर लाल बैद, युवा गौरव रतन दुगड, कलकत्ता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली, साउथ कलकत्ता सभा के अध्यक्ष बिनोद कुमार चोरड़िया, टी.पी.एफ. ईस्ट जोन के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया ने अपने भाव व्यक्तव्य व गीत के माध्यम से व्यक्त किये। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री कमल कोचर ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया ।

गंगाशहर

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,गंगाशहर के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी का 65 वां जन्मदिन आज बोथरा भवन में मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर बोलते हुए मुनि अमृत कुमार जी ने कहा आचार्य श्री महाश्रमण जी का जन्म चुरू जिले के सरदारशहर में 13 मई, 1962 को हुआ। बालक मोहन से मुनि मुदित कुमार, फिर मुनि मुदित कुमार से आचार्य श्री महाश्रमण बनना आपके पुरुषार्थ का प्रतिबिम्ब है। अहिंसा,सत्य,संयम और अनुशासन के यथार्थ प्रतीक है युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी। आचार्य श्री महाश्रमण जी का प्रत्येक कार्य समयबद्ध होता है। इतने बड़े संघ का सुव्यवस्थित संचालन करना और अपनी साध्वाचार में कभी कहीं विराम नहीं लगने देना बहुत बड़ी बात है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी का जीवन परमार्थ को समर्पित है। लाखों लाखों लोगों को सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की प्रतिज्ञा करवाकर राष्ट्र की महान सेवा की है। कार्यक्रम में मुनि प्रबोध कुमार जी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी प्रकृति से सरल,भावो से निर्मल हृदय से पवित्र आत्मा है। आप लोक कल्याण के लिए 65 हजार किलोमीटर से भी अधिक की यात्रा की है।

आचार्य महाश्रमण जी तेरापंथ धर्म संघ के प्रथम आचार्य है जिन्होंने पदयात्रा के माध्यम से नेपाल व भुटान में भी धर्म की गंगा बहाई है। मुनि उपशम कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
11 मई - 17 मई 2026

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

विलेपार्ले, मुंबई

आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या साध्वी राकेश कुमारीजी, साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी, साध्वी चेतस्वीप्रभाजी के सानिध्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी का त्रिदिवसीय कार्यक्रम एक साथ हर्षोल्लास से मनाया गया। साध्वी श्री के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी राकेशकुमारीजी ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा-आज पूरे विश्व में आचार्य महाश्रमण का पदाभिषेक मनाया जा रहा है। सरदारशहर की पावन धरा पर दूगड कुल का पवित्र प्रांगण माँ नेमादेवी की कुक्षी से अवतारी के रूप में अवतार लेकर सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया। दो दो आचार्यो के चरणों में समर्पण भाव विनयभाव से अर्हताओं को प्राप्त कर गुरुओं के हृदय में स्थान जमाया। दो आचार्यों की कसौटी पर खरे उतरे और आज आपके सानिध्य में चौथे आरे का नजारा बरत रहा है। जैसे महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर सुशोभित होते वैसे आज आप तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाश्रमण वीतराग तीर्थंकर सम सुशोभित हो रहे है। साध्वी राकेशकुमारी जी ने कहा आचार्य महाश्रमण एक सिद्ध पुरुष महान योगी महात्मा है। आपके पावन पवित्र मार्गदर्शन में हमें अपनी अध्यात्म साधना करते हुए अंतिम सांस तक संघ सेवा करती रहूँ ऐसा आशीर्वाद चाहती हूँ। विलेपारले महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण हुआ। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं में सांताक्रुज ने 'इन्द्रधनुषी रंगों' की उपमा देते हुए सुन्दर प्रस्तुति पेश की। गंभीरमल डाकलिया ने विचार रखे। ज्ञानशाला सांताक्रुज बच्चों ने एक्शन सॉन्ग से प्रस्तुति दी। साध्वी चेतस्वीप्रभाजी ने विशेषताओं पर प्रकाश डाला। साध्वी मलयविभाजी ने आचार्य प्रवर की विशिष्ट विशेषताओं का मूल्यांकन करते हुए अनेक अनेक घटना प्रसंगों को उजागर करते हुए कहा — वात्सल्यमूर्ति व अमृत के महासागर है। संगायक प्रकाश श्रीमाल ने संगीत की मधुर स्वरलहरिया से सभा को खुशनुमा बना लिया। साध्वी विपुलयशाजी ने कुशलता से मंच का संचालन किया।

गंगाशहर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी का 17वां पट्टोत्सव दिवस मुनि अमृत कुमार व साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में शान्ति निकेतन सेवा केन्द्र में मनाया गया। इस अवसर पर बोलते हुए मुनि अमृत कुमार जी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी बड़ों के प्रति विनम्रता का भाव ओर छोटों के प्रति वात्सल्य भाव रखते हैं। मुनि ने कहा कि श्रामण्य का सार है उपशम। आचार्य श्री महाश्रमण जी उपशम के उच्चतम शिखर पर आरूढ़ है। विशाल धर्मसंघ का एक छत्र नेतृत्व करते हुए भी आवेश और आवेग से कोसों दूर है। मुनि उपशम कुमार जी ने भी कहा कि इस जीवन मरण के अनन्त काल के भव भ्रमण का चक्र हमें मिटाने के लिए आचार्य श्री महाश्रमण जी प्रतिदिन हमें प्रेरित करते रहे हैं। भगवान महावीर ने आज के दिन ही कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया था। ओर आज के दिन ही आचार्य श्री महाश्रमण जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य का दायित्व ग्रहण किया था। आचार्य श्री भिक्षु ने भगवान महावीर की वाणी को सरल भाषा में जनता के सामने रखा। आचार्य श्री महाश्रमण जी उस परम्परा को ओर अधिक गति प्रदान कर रहे हैं। इस अवसर पर बोलते हुए साध्वी श्री त्रिशला कुमारी जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी 17वें पट्टोत्सव पर उनकी अभ्यर्थना करते हुए कहा - आचारांग सूत्र मे छः जीवनीकाय का विस्तृत विवेचन है। आचार्य श्री महाश्रमण जी व छः जीवनीकाय में कुछ समानताएं भी है।

पृथ्वीकाय - पृथ्वी सबकुछ सहन करती है। आंधी हो या तुफान, भूकम्प हो या बाढ सबको समभाव से सहन करती है। वैसे ही आचार्य श्री महाश्रमण जी भी चाहे चिलचिलाती धूप हो या कड़कड़ाती सर्दी हर परिस्थिति को समभाव से सहन करते है। पृथ्वी सबका आधार है, वैसे ही आपश्री सम्पूर्ण धर्मसंथ के आधारभूत है। पृथ्वी उपजाऊ होती है जितनी भी फसलें है उनको समपोषण पृथ्वी से मिलती है। आचार्य प्रवर भी धर्मसंघ का संपोषण करते है।

अप्पकाय - पानी का स्वभाव शीतलता है। उसे कितना भी गर्म करो वह शीतल हो जाता है। पानी पवित्र होता है - आचार्यश्री महाश्रमण जी भी एक शान्त पवित्र आत्मा है। पानी निर्मल होता है। आपश्री के भावों में इतनी निर्मलता है कि राग देष की लहरें आपके आस-पास भी नहीं फटकती है।

तेजस काय - अग्नि में तेज होता। आप बाह्मतेज से तेजस्वी है। आपके आभामंडल में इतना तेज है कि विरोधी से विरोधी व्यक्ति भी आपके पास आकर शांत हो जाता है।

वायु - गतिशील होती है, बिना रूके चलती रहती है आप श्री ने भी बिना रूके बिना थके सुदूर यात्राएं की है। वनस्पतिकाय - वनस्पति सबका सपोषण करती है वैसे ही आपश्री भी धर्मसंध के हर सदस्य को ज्ञान, दर्शन चारित्र का संपोषण प्रदान करते है। जैसे छ पांच स्थावर के बिना जसकाय का काम नहीं चल सकता वैसे ही आपश्री के बिना धर्मसंध का काम नहीं चल सकता है। क्योंकि तेरापंथ धर्मसंघ का एक आचार्य केन्द्रित धर्मसंध है। अंत में यही मंगल कामना करती है कि इस सम्पूर्ण सदी को अध्यात्म के आलोक से आलोकित करते रहे। साध्वी रश्मि प्रभा ने भावपूर्ण गीतिका का संगान किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के मंत्री जतनलाल संचेती, तेयुप अध्यक्ष ललित राखेचा, महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम बोथरा ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के 17वें पदाभिषेक दिवस पर अभिवंदना की। मोहन भंसाली ने काव्यपाठ किया। मनोज छाजेड़ ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

पांडेसरा

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 'आचार्य श्री महाश्रमणजी का 65वां जन्मोत्सव एवं 17वां पट्टोत्सव के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि— 'कोई दौलत पर नाज करते हैं, कोई शोहरत पर नाज करते हैं, हमें मिले महान गुरु आचार्य श्री महाश्रमणजी, हम अपनी किस्मत पर नाज करते हैं।' आचार्य श्री महाश्रमणजी एक महान प्रवचनकार हैं, साहित्यकार हैं, आगम संपादनकार हैं, रचनाकार हैं, सृजनहार हैं। समुद्र में डुबकी लगाने वाला शायद खाली हाथ रह जाए पर इस महामनस्वी के द्वार पर आने वाला खाली हाथ नहीं जाता। आकाश में ऊंचाई है पर गहराई नहीं; समुद्र में गहराई है पर ऊंचाई नहीं; सूर्य में तेजस्विता है पर शीतलता नहीं; चन्द्रमा में शीतलता है पर तेजस्विता नहीं; परंतु आचार्य श्री महाश्रमणजी में हम इन सबका संगम देख सकते हैं। 'महामनस्वी नतमस्तक हम शुभ दिन आज बढ़ाते हैं, हासिल हो नित नई सफलता यही भावना भाते हैं।' तेरापंथ महिला मंडल ने 'स्वर्णिम सूरज हरसाए रे, महाश्रमण दरबार' गीत का सुमधुर संगान किया। जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के अवसर पर सुश्री विश्वा कावड़िया, उत्तम सोनी, मुकेश बाबेल, दीप्ति डांगी आदि सभी ने अपने आराध्य के प्रति भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी कुमुद प्रभा जी ने ग्यारहवें अनुशास्ता के अनुत्तर गुणों का उल्लेख किया और अपनी स्वरचित गीतिका 'त्रिगुप्ति के महादेवता वंदन बारम्बार'का संगान किया। साध्वी मुक्ताप्रभजी ने अपनी स्वरचित कविता की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों ने एक सुंदर, 'The Best, The Beautiful Act'प्रस्तुत किया। संघ गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।साध्वी विनम्रयशाजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

हैदराबाद

जैन सेवा संघ रामकोट, हैदराबाद के विशाल हॉल में आचार्य श्री महाश्रमणजी के 65वें जन्मदिवस और 17वें पदाभिषेक दिवस का भव्य आयोजन 'महाश्रमणोत्सव' के रूप में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी ठाणा-२ के सानिध्य में तेरापंथी सभा-सिंकदराबाद द्वारा आयोजित किया गया। मुनि दीप कुमारजी ने कहा -आचार्य श्री महाश्रमण जी स्व और पर कल्याण में रत है। स्वयं की आत्मा के कल्याण की उत्कृष्ट साधना कर रहे हैं तो दूसरों को भी आत्म कल्याण की दिशा में जीने का भारी प्रयत्न करा रहे हैं। आचार्य श्री जहां धर्मसंध के शासक है तो साधक भी हैं। प्रतिकूल स्थितियों में भी शासना करते हुए, साधना की ऊँचाई पर स्थित है। वे कीर्तिमान पुरुष है। यात्राओं के अद्भुत कीर्तिमान बनाए है। आचार्य श्री आगम संगायक है। आगम वाणी के साथ प्रवचन कराते हैं, आगमों का संपादन कराते हैं, साधु-साध्वियों को आगम स्वाध्याय की पावन प्रेरणा दिराते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा- हम सौभाग्यशाली है कि ऐसे धर्मगुरु हमें प्राप्त हुए हैं। इस अवसर पर संकल्प करते है कि उनका जो आदेश निर्देश होगा उस दिशा में हमारे कदम बढ़ेंगे। मुनि श्री काव्य कुमार जी ने संचालन करते हुए कहा - आचार्यश्री अनंत शक्ति के अक्षय स्रोत है । वे संघ के पावर हाउस है एवं पूरे संघ को पावर सप्लाई करते हैं । आचार्य प्रवर का जीवन अनेक विलक्षण विशेषताओं का पुंज है। कार्यक्रम में मंगलाचरण हैदराबाद कन्यामंडल की कन्याओं ने किया। तेरापंथी सभा सिंकदाबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, ते. यु.प. अध्यक्ष राहुल गोलछा , ते.म.म. मंत्री निशाजी सेठिया, टी.पी..फ मंत्री अणुव्रत सुराणा, श्री जैन सेवा सेवा संघ के कोषाध्यक्ष सुरेश सुराणा आदि ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई । आभार ज्ञापन सभा मंत्री हेमंत संचेती द्वारा किया गया। समापन, संघ- गान के साथ हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि काव्य कुमारजी ने किया। सभा द्वारा श्री जैन सेवा संघ के पदाधिकारियों का सम्मान भी किया गया।

कांकरिया, मणिनगर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कांकरिया मणिनगर एवं तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद पूर्व के संयुक्त रूप से तेरापंथ धर्म संघ के 11वे अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव दिवस तेरापंथ भवन कांकरिया मणिनगर में शासन श्री साध्वी रामकुमारी जी आदि ठाणा-4 के सानिध्य में मनाया गया। साध्वी आत्मप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी अध्यात्म जगत के उज्ज्वल एवं देदीप्यमान नक्षत्र हैं। आप स्वकल्याण के साथ-साथ परोपकारी बनकर लाखों-लाखों के जीवन को विकास की ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। सुदीर्घ पदयात्राओं के माध्यम से जन-जन को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश देकर देश को अध्यात्म की संपदा से समृद्ध बनाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। आप चाहते हैं कि व्यक्ति से परिवार एवं परिवार से समाज तथा समाज से देश में सुधार आये। आप आत्मदृष्ठा, युगदृष्टा एवं भविष्यदृष्टा हैं। आपके आभामंडल की रश्मियाँ धरती पर शांति एवं आलोक बिखेरती रहे यही कामना है। साध्वी सुविधि प्रभा जी ने सुंदर भावों से श्रावक गण को लाभान्वित किया। कार्यक्रम का संयोजन विशाखा दफ्तरी ने किया। आभार ज्ञापन अस्मिता आंचलिया ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 17वें महाप्रयाण दिवस पर विविध कार्यक्रम

पूर्वांचल कोलकाता

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 17 वां महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा शकुंतलादेवी तोदि भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि श्री जिनेश कुमार जी ने कहा - भारतीय ऋषि परंपरा के उज्ज्वल नक्षत्र थे- आचार्य श्री महाप्रज्ञ। वे बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे जैन न्याय के राधाकृष्ण थे। उनकी प्रज्ञा को देखकर भद्रबाहु एवं हरिभद्र जीवंत हो उठते थे। उनकी बुद्धि स्थिर, चिन्तन निर्मल एवं पवित्र थी। उनमें बुद्ध जैसी करुणा, ईसा जैसा प्रेम व महावीर जैसा ध्यान था। आचार्य श्री कालूगणी के अनेक जनमों की फलश्रुति है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ वे आचार्य श्री तुलसी के विचारों के भाष्यकार थे। वे आगम की भाषा में महाप्रज्ञ थे तो गीता की भाषा में स्थितप्रज्ञ थे। उनका जन्म खुले आकाश में हुआ उसी प्रकार उनका चिंतन व्यापक एवं विशाल था। प्रेक्षाध्यान जीवन विज्ञान, अहिंसा यात्रा आदि अवदानो से उन्होंने मानव जाति को उपकृत किया। आगम संपादन व सैकड़ों पुस्तकों का लेखन उनकी विशिष्ट प्रतिभा का परिचायक है। उनका जीवन अनेक विशेषताओं का का समवाय था। वे सहज, सरल, विनम्र व सादगी पूर्ण प्रकृति के धनी थे। उनकी गुरुनिष्ठा, संघ निष्ठा, सिद्धान्त निष्ठा, आगम निष्ठा, अनुशासन निष्ठा अद्‌भुत थी। वे आचार्य तुलसी के सक्षम पट्टधर थे। आज आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 17 वां महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धायुक्त नमन। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा महाप्रज्ञ महान व्यक्तित्व के धनी थे। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उपासक प्राध्यापक डालिमन्चंद नौलखा, कलकत्ता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंधी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राजीव बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल की उपाध्यक्ष वनिता बरमेचा ,तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम पूर्वांचल की उपाध्यक्ष चंदा बैद ने अपने विचारों के माध्यम से भावांजलि अर्पित की।

उधना

तेरापंथ धर्मसंघ के 10वें अनुशास्ता महान जैनाचार्य प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ का 17वां महाप्रयाण दिवस जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, उधना के तत्वावधान में तेरापंथ भवन उधना में आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ. मदन कुमारजी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित भाविक भक्तजनों को संबोधित करते हुए मुनि डॉ. मदन कुमारजी ने कहा — आचार्य श्री महाप्रज्ञ एक विरल महापुरुष थे। वे जागृत प्रज्ञा के धनी थे। वे महाज्ञानी थे। जैन आगमों के साथ-साथ विश्व के सभी धर्मों का उन्होंने गहन अध्ययन किया था। वे प्रेक्षाध्यान के प्रवर्तक थे। ज्ञान और ध्यान की अलौकिक संपदा के धारक आचार्य महाप्रज्ञ दिव्य विभूति थे। आचार्य श्री तुलसी के निर्देशन में विशाल आगम ग्रंथों का उन्होंने संपादन किया। वे कुशल वक्ता थे, अद्भुत लेखक एवं आशुकवि थे। संस्कृत, प्राकृत एवं हिंदी तीनों भाषाओं में धाराप्रवाह प्रवचन देते थे। उनके एक प्रवचन से आदमी की दिशा और दशा बदल जाती थी। ऐसे महान आचार्य का उपलब्ध होना अध्यात्म जगत् का सौभाग्य था। भगवान महावीर के दर्शन को उन्होंने बड़ी सरल भाषा में जनता के समक्ष रखा। ऐसे महापुरुष जगत में बार-बार पैदा नहीं होते। 300 से भी अधिक पुस्तकों के लेखक आचार्य महाप्रज्ञजी का साहित्य वर्तमान विश्व में जो युद्ध का दावानल जल रहा है, उसमें शांति का संवाहक बन सकता है।

आप भी अपनी प्रज्ञा जागृत करने के लिए आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का साहित्य अवश्य पढ़ें। मुनि संयम कुमारजी एवं कल्प कुमारजी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के जीवन के विविध प्रसंगों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उधना भजन मंडली ने मंगलाचरण किया। सभाध्यक्ष निर्मल चपलोत ने स्वागत वक्तव्य दिया। अणुव्रत विश्व भारती के अणुव्रत परीक्षा प्रकल्प के राष्ट्रीय प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा महिमा चोरड़िया, प्रेमलता बुच्चा आदि ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथी सभा उधना के मंत्री मुकेश बाबेल ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

साधुता ही सबसे बड़ी...

गुरु की दृष्टि और शिष्य का सौभाग्यः

इस अवसर पर साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। उन्होंने कहा, 'तेरापंथ धर्मसंघ में जो शिष्य गुरु की दृष्टि के अनुसार कार्य करता है और जिस पर गुरु का वरदहस्त होता है, उसे पूरी दुनिया अपने हाथों पर उठा लेती है। मेरी प्रार्थना है कि मैं इसी प्रकार धर्मसंघ की सेवा करती रहूं।'

कार्यक्रम में अन्य प्रस्तुति झलकियांः

लोकार्पण : डॉ. संगीता बैद की पुस्तक 'रिफ्लेक्ट एंड राइज' का आचार्यश्री के कर-कमलों द्वारा विमोचन किया गया।

युवा शक्ति : अभातेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत और महामंत्री सौरभ पटावरी ने श्रद्धाभिव्यक्ति दी एवं ABTYP पदाधिकारियों ने तेरापंथ टाइम्स का युवा दिवस विशेषांक पूज्य प्रवर को भेंट किया।

सांस्कृतिक प्रस्तुति : अहमदाबाद युवक परिषद् के सदस्यों ने संगीतमय प्रस्तुति से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

इंद्रियाँ हैं साधना का...

पूज्य प्रवर ने व्यावहारिक निर्देश देते हुए कहा किः १. पढ़ने-लिखने का कार्य यथासंभव अच्छी रोशनी में ही करें।

२. रात्रि के समय आंखों पर अधिक दबाव न डालते हुए कंठस्थ ज्ञान को चितारने (पुनरावृत्ति) का प्रयास करें।

३. रात्रि बेला में जप और ध्यान के प्रयोगों को प्राथमिकता दें। गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि धर्म कार्यों को दीर्घकाल तक कुशलतापूर्वक करने के लिए इंद्रियों की सक्षमता बनाए रखना अनिवार्य है।

जिज्ञासा समाधान एवं भावाभिव्यक्तिः मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की विविध जिज्ञासाओं को सुना और उनका तात्विक समाधान किया। गुरुदेव के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव और दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में वर्धापना का क्रम आज भी उत्साहपूर्वक जारी रहा, जिसमें संतों और साध्वियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियां अर्पित कीं।

विशिष्ट जनों की उपस्थिति : राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के राज्य संपर्क अधिकारी डॉ. नरेन्द्र गुप्ता ने आज गुरुदेव के चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित की। उन्होंने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए शांतिदूत से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

बोलती किताब

भीतर की ओर

आत्मचिंतन, जागरूकता और आंतरिक परिवर्तन का आमंत्रण

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणादायी वाणी से संकलित पुस्तक "भीतर की ओर" मनुष्य को बाहरी दुनिया की चकाचौंध से हटकर अपने अंतर्मन की ओर देखने की प्रेरणा देने वाली एक सारगर्भित आध्यात्मिक कृति है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक आत्मचिंतन, संयम और जागरूक जीवन-दृष्टि के महत्व को सरल, सहज और प्रभावी भाषा में प्रस्तुत करती है। इसमें यह संदेश निहित है कि जीवन की वास्तविक शांति और संतुलन बाहर नहीं, बल्कि मनुष्य के अपने भीतर ही छिपे होते हैं।

आज का मनुष्य बाहरी उपलब्धियों, भागदौड़ और आकर्षणों में इतना उलझ गया है कि वह स्वयं से ही दूर होता जा रहा है। ऐसे समय में भीतर की ओर देखने की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। जब व्यक्ति थोड़ी देर ठहरकर अपने विचारों, भावनाओं और आचरण का शांतिपूर्वक निरीक्षण करता है, तब उसे अपने जीवन की वास्तविक दिशा का बोध होने लगता है। यही आत्मचिंतन उसे अधिक संतुलित, सजग और मूल्यनिष्ठ जीवन की ओर अग्रसर करता है।

मनुष्य के भीतर असीम संभावनाएँ और सकारात्मक शक्तियाँ निहित होती हैं, किंतु उनका अनुभव तभी संभव है जब वह अपने मन की गहराइयों से जुड़ सके। आत्मजागरण का मार्ग व्यक्ति को अपने दोषों को पहचानने, उन्हें सुधारने और अपने व्यक्तित्व को अधिक परिष्कृत बनाने की प्रेरणा देता है। जब मनुष्य अपने भीतर के प्रकाश को पहचान लेता है, तब उसके जीवन में स्पष्टता, शांति और आत्मविश्वास का विकास होने लगता है।

भीतर की ओर यात्रा वास्तव में आत्मविकास और आत्मबोध की यात्रा है। यह यात्रा व्यक्ति को बाहरी उलझनों से ऊपर उठकर अपने वास्तविक स्वरूप को समझने का अवसर देती है। जब मनुष्य आत्मचिंतन, संयम और सकारात्मक दृष्टि को अपने जीवन में अपनाता है, तब उसका व्यक्तित्व अधिक संतुलित, शांत और प्रेरणादायी बन जाता है। यही आंतरिक जागरूकता जीवन को गहराई, अर्थ और आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करती है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

'तेरापंथ मेरापंथ' विषय पर कार्यशाला

भीलोड़ा।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी उपसभा, भीलोड़ा द्वारा 'तेरापंथ मेरा पंथ' विषय पर एक प्रेरणादायक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 7 परिवार में से लगभग 32 सदस्य उपस्थित रहे, जो अपने आप में एक सराहनीय उपलब्धि रही। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासक प्रवक्ता अरविंद कुमार दोशी के सान्निध्य में पवित्र नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ, जिससे पूरे वातावरण में आध्यात्मिकता एवं सकारात्मकता का संचार हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा भावपूर्ण मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया, जिसने कार्यक्रम की गरिमा को और भी बढ़ा दिया। इसके पश्चात उपसभा के संयोजक महावीर चावत द्वारा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने सभी उपस्थितजनों का हार्दिक अभिनंदन करते हुए कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आमंत्रित उपासक प्रवक्ता श्री अरविंद कुमार दोशी ने 'तेरापंथ मेरा पंथ' विषय पर अत्यंत प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन विकेश दक द्वारा किया गया

75% पाप और 25% पुण्य: क्या है आपके कर्मों का लेखा-जोखा?

पुण्य और पाप अजीव हैं, पर जीव को प्रभावित करते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

पुण्य बंध पर तात्विक विश्लेषण : तेरापंथ धर्मसंघ की मान्यताओं और कर्म सिद्धांत पर आचार्यश्री की गहन देशना

लाडनूं।
29 अप्रैल, 2026

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी (भिक्षु चेतना वर्ष) के अंतर्गत आज शुक्ला त्रयोदशी के अवसर पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'पुण्य बंधः एक विश्लेषण' विषय पर प्रवचन दिया। आचार्यश्री ने जैन वाङमय के नव तत्वों की व्याख्या करते हुए पुण्य-पाप और जीव-अजीव के अंतर्संबंधों को वैज्ञानिक पद्धति से स्पष्ट किया।

कर्मों का गणितः 75% पाप और 25% पुण्य : आचार्यश्री ने आठ कर्मों का परिमाणात्मक विश्लेषण करते हुए एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने रखा। पूज्य प्रवर ने फरमाया किः

एकान्त पाप : ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय— ये चार 'घाती कर्म' पूरी तरह पाप की श्रेणी में आते हैं।

पुण्य-पाप मिश्रित : वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र कर्मों में पुण्य और पाप दोनों की संभावना होती है। इस आधार पर पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि कर्मों का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा पाप के खाते में और मात्र 25 प्रतिशत पुण्य के खाते में जाता है।

तेरापंथ की विशिष्ट मान्यताः निर्जरा के साथ पुण्य बंध : पुण्य बंध की विचारधाराओं पर प्रकाश डालते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ में यह माना जाता है कि पुण्य का बंध निर्जरा के साथ ही होता है, इसका कोई अलग से स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। उन्होंने अन्य आम्नायों (परंपराओं) द्वारा स्वतंत्र पुण्य बंध मानने के संभावित कारणों का भी विश्लेषण किया।

मिथ्यात्वी की करणीः तेरापंथ में मिथ्यात्वी की अच्छी करणी में भी 'सकाम निर्जरा' मानी गई है, इसलिए अलग से स्वतंत्र पुण्य मानने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

दान का स्वरूप : असंयमी को दान देने के संदर्भ में तेरापंथ की स्पष्ट धारणा है कि इसमें न धर्म है और न ही पुण्य, जबकि अन्य परंपराएं इसे सिद्ध करने के लिए स्वतंत्र पुण्य बंध का सहारा लेती हैं।

साधक का लक्ष्य : केवल निर्जरा आचार्यश्री ने साधकों को प्रेरित करते हुए कहा कि यद्यपि पुण्य के उदय से अनुकूलता, सुख और समृद्धि प्राप्त होती है, लेकिन एक आत्म-कल्याणकारी साधक का मुख्य लक्ष्य सदैव 'कर्मों की निर्जरा' करना ही होना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि मोक्ष (14वें गुणस्थान) तक पहुँचने के लिए अंततः पुण्य कर्मों का पूरी तरह झड़ना अनिवार्य है।

> सुख-समृद्धि की चाह से ऊपर उठकर आत्म-कल्याण की ओर बढ़ें
> -आचार्यश्री महाश्रमण

नामधारी असंयमी साधु से बेहतर है व्रतधारी गृहस्थ : आचार्यश्री महाश्रमण

'किसका संयम : किससे बेहतर' विषय पर शांतिदूत की मार्मिक देशना; मुनि प्रसन्न कुमार जी को दी गई भावांजलि

साधुता में वंचना महापाप, संयम का पालन ही जीवन की सार्थकता

लाडनूं।
01 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज 'संयम और त्याग' की सूक्ष्म व्याख्या करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि धार्मिक परंपरा में केवल वेश का महत्व नहीं, बल्कि हृदय में स्थित सम्यक्त्व और त्याग की प्रधानता ही श्रेष्ठता का पैमाना है।

अव्रत और लालसा का त्याग ही वास्तविक धर्म : आचार्य प्रवर ने मनुष्यों को तीन श्रेणियों—अव्रती, देश विरति और सर्व विरति—में वर्गीकृत करते हुए फरमाया कि कई बार वृद्धावस्था आने पर शरीर जर्जर हो जाता है, इंद्रियां शिथिल हो जाती हैं, परन्तु मनुष्य की आशा और लालसा नहीं छूटती। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि बिना त्याग के अव्रत का निरोध संभव नहीं है।

गुणस्थान के आधार पर संयम का विश्लेषण : शास्त्रों का हवाला देते हुए आचार्यश्री ने एक गंभीर तात्विक सत्य रखा। पूज्य प्रवर ने फरमायाः

नामधारी साधु बनाम गृहस्थ : यदि कोई साधु वेश में होकर भी सम्यक्त्व विहीन (प्रथम गुणस्थान वर्ती) है और परिग्रह या धन के लेन-देन में लिप्त है, तो उससे वह गृहस्थ (पंचम गुणस्थान वर्ती) कहीं श्रेष्ठ है जिसने देश विरति और सम्यक्त्व को धारण किया है।

साधुता की गरिमाः हालांकि, व्रत और संयम का पालन करने वाले सच्चे साधु सभी गृहस्थों से ऊंचे और श्रेष्ठ होते हैं। साधु वेश में रहकर वंचना करना महापाप है; जो साधुपन न पाल सके, उसे वंचना छोड़ देनी चाहिए।

योगक्षेम वर्ष : ज्ञान और स्वाध्याय का काल : आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं को योगक्षेम वर्ष के दौरान आगम स्वाध्याय और ज्ञान वृद्धि के लिए प्रेरित किया।

आचार्य श्री ने फरमाया कि जानकार साधु-साध्वियों को उदारता से अध्यापन करवाना चाहिए और शिष्यों को विनयपूर्वक ज्ञान ग्रहण करना चाहिए। शुभ योगों में समय का सदुपयोग करना ही विकास का मार्ग है।

> वेश से नहीं, व्रत से होती है श्रेष्ठता की पहचान
> -आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि प्रसन्न कुमार जी को दी गई श्रद्धांजलि : आचार्यश्री की सन्निधि में आज मुनि प्रसन्न कुमार जी की स्मृति सभा आयोजित हुई। आचार्य प्रवर ने उनके जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी एवं साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने भी उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण हेतु भावाभिव्यक्ति दी। अंत में चार लोगस्स के ध्यान के साथ उन्हें विनयांजलि अर्पित की गई।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

बुढ़ापे में यौवन

कुछ व्यक्ति यौवन में बूढ़े होते हैं, कुछ व्यक्ति बुढ़ापे में युवा। आचार्य भिक्षु चिर युवा थे। वे सत्तर वर्ष पार कर गये इसलिए अवस्था से वृद्ध बने, किन्तु आकृति से सदा युवा बने रहे। सामयिक सत्य का व्याख्याता बूढ़ा हो जाता है पर शाश्वत सत्य का व्याख्याता कभी बूढ़ा नहीं हो सकता।

जयाचार्य ने उनकी 77 वर्षीय मुद्रा का जो वर्णन किया है वह युवक-मुद्रा का वर्णन है–

- 77 वर्ष की अवस्था में भी आचार्य भिक्षु की सभी इन्द्रियां बलवान् और पुष्ट थीं, कोई इन्द्रिय हीन नहीं थी।
- गति तेज थी।
- कहीं स्थिरवास नहीं रहे।
- स्वयं गोचरी करते थे। भिक्षा के लिए जाते थे।
- उत्सर्ग (शौच) के लिए बाहर बहुत दूर जाते थे।
- खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करते थे।
- अस्वस्थ और वृद्ध लोगों को दर्शन देने घर-घर जाते थे।
- शिष्यों को पढ़ाते थे। स्वयं अपने हाथ से प्रतिलिपि कर उन्हें समझाते थे।
- आने वाले लोगों से तत्त्व-चर्चा करते थे।
- ग्रन्थ-रचना करते थे।
- जनता के बीच प्रवचन करते थे।
- अन्तिम अवस्था में भी उनकी मुद्रा मनोरम, मनोहर और आकर्षक थी। उसे देखकर चित्त आल्हाद से भर जाता था।

एक साधक के लिए बुढ़ापा अभिशाप नहीं किन्तु आनन्द का स्रोत है।

साप्ताहिक प्रेरणा

॥ 5 मिनिट महाप्राण ध्वनि करें ॥

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

वर्तमान काल में मौन

'कोई सावद्य दान देता है, लेता है, उस समय उस विषय में साधु को उसके लाभा-लाभ के बारे में पूछने पर उसे वर्तमान काल में मौन रहना चाहिए।'

इस पर स्वामीजी ने दृष्टांत दिया– 'कुश के दोनों छोर आग से गरम हो उठते हैं और वह बीच में ठंडा रहता है। इधर से पकड़ने पर हाथ जलते हैं और दूसरे छोर पर पकड़ने पर भी हाथ जलते हैं पर उसे बीच में से पकड़ने पर हाथ नहीं जलते हैं।

इसी प्रकार वर्तमान काल में सावद्य दान के विषय में पुण्य कहने से छह काय के जीवों की हिंसा लगती है और पाप कहने से दान देने वालों के अंतराय होता है, इसलिए वर्तमान काल में मौन रखना चाहिए।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

39 श्रावकों की 11 प्रतिमा

6. ब्रह्मचर्य प्रतिमा : समय सीमा– छह मास

   विधि– पूर्व के त्यागों के साथ इसमें सर्वथा शील व्रत का पालन करना, पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना।

7. सचित्त प्रतिमा : समय सीमा– सात मास

   विधि– इस प्रतिमा का धारक साधक 12व्रतों का तो धारण करता ही है साथ में सचित्त आहार का त्याग रखता है।

8. आरंभ प्रतिमा : समय सीमा– आठ मास

   विधि– इसका साधक स्वयं किसी तरह का आरंभ-समारंभ नहीं करता है।

9. प्रेष्य प्रतिमा : समय सीमा– नौ मास

   विधि– इस प्रतिमा का धारक साधक न आरंभ करता है और न ही नौकर आदि से करवाता है।

10. उद्दिष्ट वर्जक : समय सीमा– दस मास

    विधि– स्वयं के लिये बना भोजन नहीं लेता है। इस प्रतिमा का धारक साधक क्षर से मुण्डन करता है अथवा शिखा का धारण करता है। घर-गृहस्थी संबंधी बातों में 'मैं जानता हूं या नहीं' इसके अलावा कुछ नहीं बोलता।

11. श्रमण भूत : समय सीमा– 11 मास

    विधि– इस प्रतिमा का धारक लोच भी कर सकता है और साधु का आचार झण्डोपकरण एवं वेश धारण करता है। ज्ञातिजन से उसका प्रेम बंधन नहीं टूटता इसलिए वह भिक्षा के लिये केवल ज्ञातिजनों में ही जाता है अगली प्रतिमा में पहली प्रतिमा के त्याग यथावत रहते हैं।

क्या आप जानते हैं?

भाटा बर्फ (पानी की बर्फ) को पानी के समान माना जाए। उसे तिविहार तपस्या में भी खाया जा सकता है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

जैन दर्शन के 'नित्यानित्यवाद' पर शांतिदूत की तात्विक देशना

ओस की बूंद जैसा क्षणभंगुर है जीवन, समय का सदुपयोग ही सच्ची साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

प्रमाद छोड़ें, संयम जोड़ें : योगक्षेम वर्ष में आगम स्वाध्याय की बही आध्यात्मिक गंगा

लाडनूं।
04 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज 'जीवन की अनित्यता' विषय पर गहन तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया। आचार्यश्री ने जैन दर्शन के सुप्रसिद्ध 'नित्यानित्यवाद' के आलोक में पदार्थ और आत्मा के शाश्वत एवं नश्वर स्वरूप को वैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट किया।

नित्य और अनित्य का सह-अस्तित्व : आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जैन दर्शन की अवधारणा के अनुसार एक ही पदार्थ में नित्यता और अनित्यता युगपत (एक साथ) होती है। गुण-पर्याय का आश्रय स्थान द्रव्य है; न तो पर्यायहीन द्रव्य हो सकता है और न ही द्रव्य विहीन पर्याय। आकाश से लेकर दीपक तक, संसार के समस्त पदार्थ इसी सिद्धांत से संचालित हैं। आकाश अपने अनंत प्रदेशों की अपेक्षा शाश्वत है, किंतु पर्याय परिवर्तन की अपेक्षा अनित्य है। इसी प्रकार, पुद्गल के अणु शाश्वत हैं पर दीपक का पर्याय अशाश्वत है।

ओस की बूंद जैसा अस्थायी है जीवनः उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन का संदर्भ देते हुए आचार्यश्री ने जीवन की क्षणभंगुरता को दो मर्मस्पर्शी उदाहरणों से समझायाः

> अनित्यता के बोध से ही संभव है वैराग्य का उदय
> –आचार्यश्री महाश्रमण

1. **वृक्ष का पत्रः** जिस प्रकार वृक्ष का पका हुआ पत्ता समय बीतने पर स्वतः गिर जाता है, वैसे ही मानव जीवन का अंत निश्चित है।

2. **कुश पर ओस :** कुश (घास) की नोक पर टिकी ओस की बूंद क्षण भर में ओझल हो जाती है, वैसे ही मनुष्य का जीवन अस्थायी है। गुरुदेव ने आगमकार के संदेश को दोहराते हुए प्रेरणा दी— 'समयं गोयमं मा पमायए' अर्थात् हे गौतम! क्षण भर भी प्रमाद मत करो।

साधना का संकल्प और कंठस्थीकरणः योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करते हुए आचार्य प्रवर ने साधु-साध्वी एवं समणी वृन्द को उत्तराध्ययन सूत्र के 'दसवें अध्ययन' को कंठस्थ करने की प्रेरणा दी। जिनके पास यह अध्ययन पूर्व में सिद्ध है, उन्हें प्रतिदिन एक बार इसकी आवृत्ति (चितारने) का निर्देश दिया गया। आचार्यश्री ने इच्छुक चारित्रात्माओं को संस्कृत भाषा में कंठस्थीकरण का संकल्प भी कराया।

जिज्ञासा समाधान एवं अभिवंदनाः मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की विविध जिज्ञासाओं का समाधान किया। जन्मोत्सव और पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में वर्धापना का क्रम आज भी जारी रहा, जिसमें संतों और साध्वियों ने अपनी प्रस्तुतियाँ अर्पित कीं। इस अवसर पर आचार्यश्री और साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने श्री डूंगरगढ़ के पारख परिवार को आध्यात्मिक संबल और मंगल प्रेरणा प्रदान की।

योगक्षेम चित्रमय झलकियां

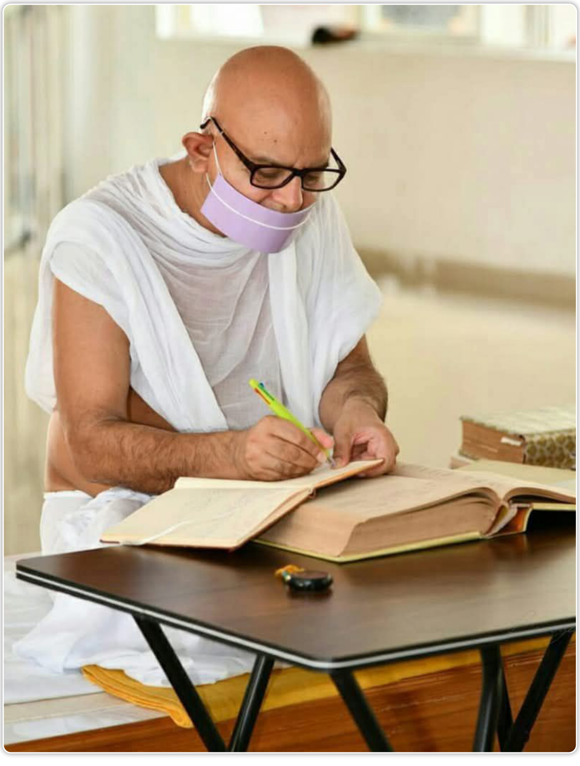

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।